www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

अध्यात्मवाद ही क्यों ?

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य
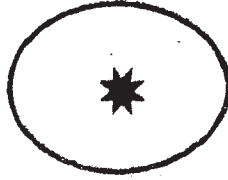
प्रकाशक :
युग निर्माण योजना
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

२००५ मूल्य : 5·00 रुपये

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या

यह तथ्य ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मानवी सत्ता दो भागों में विभक्त है। एक भौतिक शरीर का पक्ष है और दूसरा आत्मिक चेतना का। भौतिक निर्वाह के लिए सुविधा-साधन चाहिए और आत्मिक संतोष के लिए आदर्शवादी वातावरण।

······ यहाँ एक बात यह भी समझ लेने की है कि चेतना मुख्य है और कलेवर गौण। आत्मिक उच्चता रहते स्वल्प-साधनों में भी हँसते-हँसाते गौरवपूर्ण ऋषि जीवन जिया जा सकता है किंतु प्रचुर साधनों के होते हुए भी आंतरिक विकृतियाँ असुर स्तर के उद्वेग-अनाचारों का सृजन करती रहेंगी।

मुद्रक :

युग निर्माण योजना प्रेस,

गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अध्यात्मवाद ही क्यों ?

१. व्यक्तिगत संदर्भ में

आज का व्यक्ति समस्याओं के जाल में दिन-दिन जकड़ता चला जा रहा है। क्या धनी, क्या निर्धन, क्या विद्वान्, क्या अशिक्षित, क्या रुग्ण, क्या स्वस्थ सभी स्तर के मनुष्य अपने को अभावग्रस्त और संकटत्रस्त स्थिति में पाते हैं। भूखे का पेट-दर्द दूसरी तरह का और अतिभोजी का दूसरे ढंग का, पर कष्ट-पीड़ित तो दोनों ही समान रूप से हैं। जीवन क्षेत्र में तथा संसार में समस्याओं के आकार-प्रकार अनेक प्रकार के दिखते हैं। उनमें भिन्नता भी बहुत रहती है। एक-दूसरे से असंबद्ध प्रतीत होती है और उनके कारण पृथक्-पृथक् दिखाई पड़ते हैं, पर उनके मूल में एक ही कारण होता है, अध्यात्मवादी दृष्टिकोण। यदि इस तथ्य को समझ लिया जाए तो असंख्य समस्याओं और अगणित संकटों का समाधान एक ही उपाय से कर सकना संभव हो जायेगा। प्रकाश के अभाव का ही नाम अंधकार है। जब रोशनी होती है तो अंधकार चला जाता है। अध्यात्म की ज्योति बुझ जाने से संकट खड़े होते हैं और उस प्रकाश के धूमिल पड़ जाने से अनेकानेक समस्याएँ उठती और उलझती चली जाती हैं।

छुट-पुट उपचार तो अनेक ढंग से निकल आते हैं किंतु टिकाऊ हल अध्यात्म के सहारे से ही निकल सकता है। पेट में अपच होने से रक्त अशुद्ध होता है और बढ़ती हुई सड़न से अनेक नाम रूप वाले रोग उत्पन्न हो जाते हैं। इनका स्थानीय और सामयिक उपचार करने से तात्कालिक राहत मिल सकती है, पर स्थायी समाधान ढूँढ़ना हो तो रक्त शुद्धि और अपच निवारण की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बात सोचनी पड़ेगी। सारे शरीर पर निकली चेचक की एक-एक फुँसी की मरहम पट्टी कैसे की जायेगी ? उपाय वही सही है, जिससे रक्त में घुले विष का निवारण करके, आज की चेचक और कल की होने वाली अन्य बीमारियों की जड़ काटी जाए। सड़े कीचड़ में रेंगने वाले कीड़े उपजते हैं और गंदगी के ढेर में मक्खी, मच्छरों की उत्पत्ति होती है। हर कीड़े और मच्छर मारने के लिए लाठी लिए फिरना बेकार है। मार देने पर भी वे उपज पड़ेंगे। आधार बना रहेगा तो उत्पत्ति का क्रम रुकेगा नहीं। इन कृमि-कीटकों से छुटकारे का एक ही उपाय है कि कीचड़ और गंदगी को साफ कर दिया जाए।

परमात्मा ने अपने पुत्र मनुष्य को इस विश्व उद्यान में बहुत कुछ पाने कमाने के लिए भेजा है। समस्याएँ उसकी भूलों से सचेत करने वाली लाल बत्ती की तरह है। यदि हम मनुष्योचित्त दृष्टिकोण अपनाएँ और शालीनता का जीवन जिएँ, तो अवरोधों से जूझकर शक्ति नष्ट करने की समस्या न रहेगी और प्रगति पथ पर अनवरत गति से बढ़ते हुए पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करना ही तब अपने सामने एकमात्र कार्य रह जायेगा। आइए, विचार करें कि हमारे व्यक्तिगत जीवन में आए दिन कौन-कौन-सी समस्याएँ त्रास देती हैं ? वे क्यों उत्पन्न होती हैं और उनका स्थिर समाधान क्या हो सकता है ?

मनुष्य के व्यक्तिगत जीवन की सारी समस्याएँ इन पाँच वर्गों के अंतर्गत आ जाती हैं—(१) शारीरिक (२) मानसिक (३) आर्थिक (४) पारिवारिक तथा (५) आत्मिक।

(१) सर्वप्रथम समस्या स्वास्थ्य संकट की है। हममें से अधिकांश को शारीरिक दुर्बलता घेरे रहती है और बीमारियों का दौर चढ़ा रहता है। विचारणीय है कि ऐसा क्यों होता है ? सृष्टि में असंख्य प्राणी हैं। वे जन्मते-मरते तो हैं पर बीमार कोई नहीं पड़ता।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मनुष्य और उसके शिकंजे में कसे हुए थोड़े-से पालतू पशुओं को छोड़कर स्वच्छंद निर्वाह करने वाले जीव-जंतुओं में से किसी को दुर्बलता या रुग्णता की व्यथा नहीं सहनी पड़ती। बुढ़ापा और मृत्यु का सामना तो सबको करना पड़ता है, पर जब तक जीता है, तब तक समूचा प्राणी जगत् निरोग हो जाता है। अकेले मनुष्य पर ही दुर्बलता और रुग्णता की घटाएँ छाई रहती हैं। इस अपवाद का कारण एक ही है—उसका आहार-विहार संबंधी असंयम, प्रकृति के निर्देशों का धृष्टतापूर्वक उल्लंघन।

जीभ का चटोरापन—स्वादिष्टता के नाम पर अभक्ष्य पदार्थों का समय-कुसमय अनावश्यक मात्रा में उदरस्थ करते रहने से पेट की क्षमता नष्ट होती है और वह अत्याचार-पीड़ित, दीन-दुर्बल की तरह अपना काम निपटाने में असमर्थ हो जाता है। पेट की अपच हजार बीमारियाँ उत्पन्न करती है, यह तथ्य सर्वविदित है। लुकमान सही कहते थे कि "मनुष्य अपने असमय मरने और गड़ने के लिए अपनी कब्र आप खोदता है।" इंद्रिय असंयम से वह अपने शक्ति भंडार को होली की तरह जलाता है और बर्फ की तरह अपने पौरुष को गलाकर समाप्त करता है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या, आलस्य, प्रमाद, गंदगी जैसे दुर्गुण अपनाने वाले, प्रकृति की प्रेरणाओं और नियत मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाले नियति की दंड व्यवस्था से बच नहीं सकते। उन्हें रुग्णता की व्यथा सहनी ही पड़ेगी।

इसका निवारण दवादारु की जादूगरी से नहीं हो सकता। यदि असंयमी जीवन जीने पर भी दवादारू के सहारे स्वास्थ्यरक्षा संभव रही होती तो अमीरों ने और चिकित्सकों ने अब तक हाथी जैसा स्वास्थ्य सँजो लिया होता। प्रकृति की उद्दंड अवज्ञा करने वाले अपराधी क्षमा योग्य नहीं होते और आये दिन रुग्णता से कराहते हैं। यदि हमें सचमुच ही स्वास्थ्य की स्थिरता अपेक्षित हो

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

तो उसका एकमात्र उपाय प्राकृतिक जीवन है। आहार-विहार का संयम कड़ाई से पालन करने के अतिरिक्त और किसी उपाय से स्वास्थरक्षा की समस्या हल नहीं हो सकती।

कहना न होगा कि इंद्रिय-लिप्साओं से छुटकारा पाना, सुव्यवस्थित जीवनक्रम अपनाना शारीरिक क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली अध्यात्म प्रक्रिया ही है। आत्मसंयम और आत्मानुशासन का नाम ही अध्यात्म है। उसका प्रयोग यदि विवेकशीलता और दूरदर्शिता अपनाते हुए स्वास्थ्य प्रयोजन के लिए किया जाता रहे, तो हममें से किसी को भी न तो दुर्बलता घेरेगी और न रुग्णता छाई रहेगी। अब या अब से हजार वर्ष बाद जब भी स्वास्थ्य संकट से निपटना आवश्यक प्रतीत होगा और उसका स्थिर समाधान खोजा जायेगा तो इसी निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि जीवनचर्या का निर्धारण अध्यात्मवादी दृष्टिकोण से किया जाए और शारीरिक संपदा का उपयोग करने में प्रकृति निर्देशों का पालन करने के लिए कड़ाई के साथ संयम बरता जाए। जिस दिन यह तथ्य हृदयंगम कर लिया जायेगा, उसे व्यावहारिक जीवन में उतार लिया जायेगा, उस दिन स्वास्थ्य संकट का अंधकार कहीं भी दृष्टिगोचर न होगा।

(२) मानसिक उद्विग्नता मनुष्य जीवन के अंतर्गत उपस्थित दूसरा संकट है। हममें से अधिकांश व्यक्ति उद्विग्न, निराश, चिंतित, विक्षुब्ध, भयभीत, कायर, असंतुष्ट पाए जाते हैं। मानसिक दृष्टि से शांत, संतुष्ट, संतुलित और प्रसन्न कोई विरले ही दीख पड़ेंगे। इसके लिए दूसरों के व्यवहार और परिस्थितियों को भी सर्वथा निर्दोष तो नहीं कहा जा सकता, पर यह स्वीकार करना ही होगा कि इससे बहुत बड़ा कारण अपने चिंतन तंत्र की दुर्बलता ही रहती है। हम अपनी ही इच्छा की पूर्ति चाहते हैं, हर किसी को अपने ही शासन में चलाना चाहते हैं और हर परिस्थिति को अपनी मर्जी के अनुरूप बदलने की अपेक्षा करते हैं। यह मूल गति है कि यह संसार हमारे

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लिए ही नहीं बना है, इसमें व्यक्तियों का विकास अपने क्रम से हो रहा है और परिस्थितियाँ अपने प्रवाह से बह रही है। हमें उनके साथ तालमेल बिठाने की कुशलता प्राप्त करनी चाहिए।

परिस्थितिजन्य असंतोष भी अधिकांश में तो अपने चिंतन दोष के कारण उत्पन्न होते हैं। यदि अमीरों के साथ अपनी तुलना की जाए तो स्थिति गरीबों जैसी प्रतीत होगी और दुःख बना रहेगा। यदि उसकी तुलना मापदंड को गरीबों के साथ सदा किया जाए तो प्रतीत होगा कि अपनी वर्तमान स्थिति में लाखों-करोड़ों से अच्छी है। गरीबी और अमीरी सापेक्ष है। बड़े अमीरों की तुलना में हर कोई गरीब ठहरेगा और हर गरीब को अपने से अधिक अभावग्रस्त दिखाई पड़ेंगे। उनसे तुलना करने पर वह अपने को सुसंपन्न अनुभव कर सकता है। दृष्टिकोण सही होने से व्यक्ति अपने विकास के लिए प्रयास करते हुए भी असंतोष और घुटन से बच सकता है।

दूसरों के व्यवहार के संबंध में भी यही सिद्धांत लागू होता है। हर व्यक्ति तम और सत् के ईंट-चूने से बना है। इसमें बुराइयाँ भी हैं और अच्छाइयाँ भी। जब छिद्रान्वेषण का हरा चश्मा पहन लिया जाता है, तो हर वस्तु, हर प्राणी हरा दीखेगा। दोष ही ढूँढ़ते रहें तो हर किसी में यहाँ तक कि सूर्य और भगवान् में भी मिल जायेंगे और उन पर क्रोध करना पड़ेगा, किंतु यदि अच्छाइयाँ तलाश की जाएँ तो एक भी पदार्थ या प्राणी ऐसा न मिलेगा कि जिसमें श्रेष्ठता का सर्वथा अभाव हो। यदि गुण दर्शन की दृष्टि हो तो बदला हुआ चश्मा सर्वत्र ईश्वर की सत्ता का आलोक देख सकेगा। जिन लोगों के अपकार गिनते रहा गया है, वे शत्रुवत् प्रतीत होंगे किंतु जब उनके उपकारों को याद किया जाए, तो प्रतीत होगा कि उनके मित्र व्यवहार की सूची भी छोटी नहीं है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सुखों की अपनी उपयोगिता है, साधन-संपन्नता के सहारे प्रगति क्रम में सुविधा होती है- यह सर्वविदित है, पर यह भी भुला नहीं दिया जाना चाहिए कि कठिनाइयों की आग में पककर खरा और सुदृढ़ बना जाता है। सोने को अग्नि परीक्षा में और हीरे को खराद पर चढ़ने में कठिनाई का सामना तो करना पड़ता है पर उसका मूल्यांकन, उससे कम में हो भी तो नहीं सकता। कठिनाइयों के कारण मनुष्य में धैर्य, साहस, कौशल, पराक्रम जैसे कितने ही सद्‌गुण विकसित होते हैं, जागरूकता बढ़ती है और बहुमूल्य अनुभव एकत्रित होते हैं। अभावों और संकटों में दुर्बल मनःस्थिति के लोग तो टूट जाते हैं, पर जिनमें जीवन है वे चौगुनी, सौगुनी शक्ति के साथ उभरते देखे गए हैं। संपन्नता की अपनी उपयोगिता है और विपन्नता का अपना महत्त्व है। यदि दोनों का समुचित लाभ उठाया जा सके, तो यह उभयपक्षीय अनुदान प्रगति के पथ पर अग्रसर करने के लिए अपने-अपने ढंग से सहायता करते दिखाई पड़ेगा।

नमक और मीठा परस्पर विरोधी है तो भी उनसे स्वाद संतुलन बनता है। तानों और बानों के धागे एक-दूसरे से विपरीत दिशा में चलते हैं पर उनका गुँथन उपयोगी वस्त्र बनकर सामने आता है। रात्रि और दिन की स्थिति में भिन्नता ही नहीं विपरीतता भी है पर उनके समन्वय से ही समय-चक्र घूमता है। विपरीतताओं का समन्वय ही संसार है। जीवन शृंखला इन विचित्रताओं की कड़ियों से मिलकर बनी है। हमें दोनों की उपयोगिता समझनी चाहिए।

पुण्यात्माओं से बहुत कुछ सीखा जाता है और पापियों को सुधारने की नीति अपनाकर आत्म परिष्कार कर अपनी करुणा, सहृदयता, सेवा भावना को विकसित करने का अवसर मिल सकता है। दुरंगी दुनियाँ की विचित्रता से खिन्न होने की अपेक्षा यह अधिक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

बुद्धिमत्तापूर्ण है कि उसके सहारे खट्टे-मीठे अनुभव प्राप्त किए जाएँ और इन परस्पर परिस्थितियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के लाभ लिये जाएँ। जिनका चिंतन आध्यात्मिक स्तर का होगा, वे समुद्र में आने वाले ज्वार-भाटे से भयभीत न होंगे वरन् इतना भर सोचेंगे कि किस स्थिति का किस प्रकार सामना किया जाए और उससे क्या लाभ उठाया जाए ?

मानसिक संतुलन बना रहे तो घाटा, शोक, विरोध, अभाव जैसी विपन्नता भी विचलित न कर सकेगी। क्रांतिकारी शहीदों ने फाँसी के तख्ते हँसते हुए चूमे थे। बढ़े-चढ़े त्याग, बलिदान प्रस्तुत करने वाले महामानवों के चेहरे पर विषाद की एक भी लहर उत्पन्न नहीं होती। यदि घटनाओं में ही सारी शक्ति रही होती, तो वे सभी पर एक जैसा असर डालती। पर देखा जाता है कि उसी स्थिति में एक व्यक्ति सिर धुनता है और दूसरा बिना किसी हैरानी के काम करता है। यह मानसिक स्तर का ही परिचय है।

आत्मिक दृष्टिकोण मानसिक संतुलन की दृष्टिकोण के परिष्कार की प्रेरणा देता है यदि उसे अपनाया जा सके तो मनुष्य जीवन में शोक-संतापों की, उद्वेग-विक्षोभों की समस्या का सहज ही समाधान हो सकता है। यह कार्य इच्छित परिस्थितियाँ बना देने से संभव नहीं हो सकता। इच्छाओं की कोई सीमा नहीं, एक की पूर्ति होते ही दूसरी उठ खड़ी होती है, वह उससे भी बड़ी दुःखदायी होती है और अभाव-असंतोष जहाँ का तहाँ बना रहता है। यदि साधन जुटा देने भर से सुख-संतोष प्राप्त करना संभव रहा होता, तो सभी साधन संपन्न व्यक्ति संतुष्ट पाए जाते किंतु वे तो अभावग्रस्त लोगों की अपेक्षा और भी अधिक विक्षुब्ध पाए जाते हैं। मनुष्य की दूरदर्शिता जब कभी गंभीरतापूर्वक आजीवन प्रसन्नता बनाए रहने का उपाय खोजेगी, तब उसे एक ही मार्ग मिलेगा कि

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अध्यात्मवाद की नीति अपनाई जाए और मनःक्षेत्र को परिष्कृत किया जाए।

(३) शारीरिक अस्वस्थता और मानसिक उद्विग्नता की समस्याओं पर विचार करने के उपरांत आइए अब आर्थिक समस्या पर विचार करें। यह हर किसी के सामने मुँह बाये खड़ी हैं। ऐसे लोग कोई बिरले ही मिलेंगे, जो अपने को अधिक दृष्टि से संतुष्ट कह सकें। हर व्यक्ति अपने इस अभाव को दूर करने के लिए बहुत चिंतित दिखाई पड़ता है। बहुत हाथ-पैर पीटने पर बात उतनी नहीं बनती, जितनी आवश्यकता अथवा इच्छा है। इसे व्यापक दरिद्रता का संकट कहा जा सकता है। इस समस्या पर भी विचार किया जाना चाहिए और उसका स्थिर समाधान खोजा जाना चाहिए।

पहले यह विचार करना होगा कि धन आखिर है क्या ? मानवी बल और बुद्धिबल का विभिन्न प्रयोजनों में प्रयोग करने से जो उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं, उन्हें संपत्ति कहा जा सकता है। धन की सही परिभाषा यही है। अर्थशास्त्र का आरंभ यहीं से होता है। जुआ, सट्टा, लाटरी, ब्याज, उत्तराधिकार, गढ़ा खजाना आदि के रूप में बिना श्रम की संपत्ति कई लोग प्राप्त कर लेते हैं, पर उसे अपवाद कहना चाहिए। इस प्रकार की संपदा के प्रति औचित्य की मान्यता बदली जानी चाहिए, अन्यथा विडंबना बनी रहेगी। आज नहीं तो कल वह दिन आकर ही रहेगा, जब अर्थशास्त्र का शुद्ध अध्यात्म सम्मत सिद्धांत ही सर्वमान्य होगा। शारीरिक और मानसिक श्रम का उचित मूल्य ही लोग धन के रूप में प्राप्त कर सकेंगे।

अधिक धन उपार्जित करके अधिक सुख-साधन प्राप्त करने की इच्छा हो तो अपनी शारीरिक श्रम-क्षमता और मानसिक दक्षता बढ़ाई जानी चाहिए। इस दृष्टि से जो जितना आगे बढेगा, वह

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

उतना धन प्राप्त करेगा। अपना दुर्भाग्य यह है कि हम श्रम से जी चुराने की प्रकृति अपनाते हैं और आरामतलबी से समय गुजारना चाहते हैं। श्रम की अप्रतिष्ठा हमारा सामाजिक दोष है। हरामखोरों को बड़ा आदमी एवं भाग्यवान् कहा जाता है। श्रमजीवी अभागे और अछूत माने जाते हैं। यह प्रवृत्ति बदली जानी चाहिए। संपन्नता को खरीदने के लिए श्रम-क्षमता विकसित की जानी चाहिए।

शरीर की तरह ही मस्तिष्क भी उपार्जन का साधन है। शिक्षा, शिल्प, कला कौशल, व्यावहारिक मधुरता आदि वरिष्ठता के सहारे अधिक धन कमाया जा सकता है। हम लक्ष्मी पूजन जैसे किसी आकस्मिक संयोग से धन प्राप्त करने की बात सोचते हैं और चाहते हैं कि अकर्मण्यता-अदक्षता जहाँ की तहाँ बनी रहे। आलस्य-प्रमाद में कमी न करनी पड़े और प्रचुर मात्रा में धन ऐसे ही आसमान से छप्पर फाड़कर बरस पड़े। यह अनात्मवादी मान्यता ही अर्थसमस्या का मूल कारण बन जाती है।

आध्यात्मिक दृष्टिकोण संपन्नता का औचित्यपूर्ण मार्ग सुझाता है। हमें अधिक परिश्रम के लिए उत्साह उत्पन्न करना चाहिए। हरामखोरी और कामचोरी को भी नैतिक अपराधों की श्रेणी में गिनना चाहिए। दक्षता बढ़ाने के लिए अधिक सीखने, अधिक जानने और अधिक सुयोग्य बनाने के लिए सदैव सचेष्ट रहना चाहिए। इस बढ़ी हुई दक्षता की कीमत पर निश्चय ही अधिक धन प्राप्त किया जा सकेगा और उससे उचित सुख-सुविधा का उपयोग किया जा सकेगा। आर्थिक प्रगति का यही राजमार्ग है। इसे छोड़कर सस्ते में सरलतापूर्वक बहुत जल्दी अधिक धन प्राप्त करने की बात सोचना प्रकारांतर से अनैतिक एवं अपराधी प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए अग्रसर होना है।

ठगी, चोरी, बेईमानी, लूट, डकैती, रिश्वत, मिलावट, कमतौल, मुनाफाखोरी, करचोरी, तस्करी आदि अनैतिक अपराधों के पीछे उनके

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कर्ताओं की ही प्रकृति काम कर रही होती है कि बिना उचित क्षमता एव श्रमशीलता के स्वल्प काल में अधिक धन कमा लिया जाए। कमजोर प्रकृति के लोग मिलावट, कम तौलना जैसे सरल अपराध कर पाते हैं, दुस्साहसी भयंकर कुकृत्य कर गुजरते हैं। दिशा एक है, प्रयोग करने की स्थिति भर अलग है। यह गंभीरतापूर्वक समझा जाना चाहिए कि यह अपराधी प्रकृति मानवी चरित्र का सर्वनाश करती है, उसकी प्रामाणिकता और प्रतिष्ठा नष्ट करके, अस्पृश्य संक्रामक रोग से ग्रसित की तरह उसे घृणास्पद बना देती है।

अनैतिकता अपनाकर जीवनयापन करने वाला—मनुष्य अमीर भले ही हो जाए, पर उसका व्यक्तित्व दिन-दिन पतन के गर्त में गिरता जायेगा। आत्म प्रताड़ना उसे जर्जर बना देती है। अपनी नजर में गिरा हुआ मनुष्य किसी अन्य की नजर में ऊँचा नहीं उठ सकता। आत्मा और परमात्मा को अदालत में जघन्य अपराधियों की तरह लज्जित खड़े होने वालों को अमीरी कितनी महँगी पड़ती है, इसे गंभीरतापूर्वक समझने का प्रयत्न किया जाए तो कदाचित् ही किसी की हिम्मत उस मार्ग पर चलने की न हो। अवांछनीय धनलिप्सा ही समस्त दुष्कर्मों की जननी है। वह व्यसन, अनाचार, विलासिता, फिजूलखर्ची जैसे अनुपयुक्त मार्गों में खर्च होता है और उससे अन्य प्रकार की नई समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।

उपार्जन की क्षमता बढ़ाने के अतिरिक्त आर्थिक संतुलन का दूसरा उचित उपाय यह है कि आमदनी के अनुरूप खर्च किया जाए और बजट बनाकर चला जाए। सादगी से रहा जाए। अपनी जितनी आमदनी के दूसरे समझदार लोग जिस स्तर का जीवनयापन करते हैं, उसका अनुसरण किया जाए। यदि आमदनी नहीं बढ़ सकती, तो खर्च सीमित रहने चाहिए, विशेषतया नये खर्चे तो सिर पर लादना ही नहीं चाहिए। बच्चों की संख्या बढ़ाना भी आर्थिक संकट मोल लेने जैसा ही है। इसके कारण सारा परिवार अर्थाभाव में पिसता है। बच्चों का विकास भी नहीं हो पाता। उनकी आत्मा इस दयनीय

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्थिति के लिए उन्हीं मूर्खों को कोसती है, जो संतानोत्पादन से पूर्व इस नये उत्तरदायित्व के निर्वाह में असमर्थ होते हुए भी अंधेरे में कदम बढ़ाते चले गए।

आध्यात्मिक सिद्धांत के अनुसार परिवार में क्रियाशीलता बढ़ाकर भी संकट की चिंता से बचा जा सकता है। एक कमाए सब खाएँ की परंपरा अपने घरों में चल रही है। इसे छोड़कर छोटे गृह-उद्योगों की व्यवस्था हर घर में की जा सकती है और खाली समय में कुछ कमा लेने का उत्साह उत्पन्न हो तो ऐसे उपाय सहज ही खोजे जा सकते हैं, जिनमें आजीविका वृद्धि की दिशा में प्रगति हो सके।

ऋण लेने की आदत बेईमानी का ही छोटा रूप है। आपत्तिकाल में अलग किसी व्यवसायिक प्रयोजन के लिए पूँजीरूप में ऋण लिया जा सकता है, किंतु खर्च बढ़ा लेने और उसकी पूर्ति ऋण लेकर करना ऐसा अविवेक है, जिसका दुष्परिणाम एक दिन दिवालिया बन जाने, बेईमान कहलाने और तिरस्कार सहने के रूप में सामने आता है। आध्यात्मिक आदर्शों से प्रभावित व्यक्ति आवश्यकताओं को सीमित रखने में समर्थ होता है तथा ऋणी बनना पसंद नहीं करता इसलिए इस विडंबना से बच जाता है।

अपने देश में सामाजिक कुरीतियाँ अर्थ संकट उत्पन्न करने का बहुत बड़ा कारण है। विवाह-शादियों में होने वाले अपव्यय कुरीतियों में सर्वप्रथम है। मृतक भोज, धर्माडंबर की आड़ में कुपात्रों से जेब कटाते रहना जैसी अनेक मूर्खताएँ अपने समाज में प्रचलित हैं, जिनके कारण असाधारण रूप से धन की बर्बादी होती है और लोगों को दरिद्र एवं बेईमान बनना पड़ता है और सभी कुप्रथाएँ भी ऐसी ही हैं, जिनको चौधरी-पंचों की लोकचर्चा की परवाह किये बिना एक ही झटके में उखाड़ फेंकना चाहिए। यह साहस विवेकवान् तथा आत्मबल संपन्न व्यक्ति ही कर सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अविवेकी लोग ओछे रास्ते अपनाकर, धनी बनना चाहते हैं किंतु अनाचार एक दिन प्रकट होकर ही रहता है, तब ग्राहकों के असहयोग का संकट उस उपार्जन को ठप्प करके रख देता है। कामचोर और बेईमान कर्मचारी कभी उन्नति नहीं कर सकते। ईमानदारी की नीति पर चलते हुए ही हर व्यक्ति प्रामाणिक बन सकता है। अपने श्रम एवं उत्पादन का प्रामाणिकता के आधार पर अधिक मूल्य पा सकता है एवं अधिक सम्मान भी।

अर्थक्षेत्र में श्रमनिष्ठा, मनोयोगपूर्वक कार्य संलग्नता, ईमानदारी, प्रामाणिकता, सादगी, मितव्ययिता यह सभी गुण अध्यात्म आदर्शों के अनुरूप हैं। इन्हें अपनाए बिना अर्थ संकट से बचे रहने का, अर्थ उपार्जन तथा संतुलन का और कोई मार्ग नहीं। अनीति की कमाई का आकर्षण तथा मूर्खतापूर्ण अपव्यय की आदत ही अर्थ संबंधी विकृतियों का कारण बनती है। आध्यात्मिक दृष्टिकोण का व्यक्ति इन दोनों से सहज ही बच जाता है।

अनुत्पादकता तथा जमाखोरी को आर्थिक संतुलन के लिए विष माना जाता है। 'कमाया सौ हाथ से जाए, पर दान हजार हाथ से करें', की नीति अध्यात्म की परंपरा है। वह संतोष हानिकारक है, जिससे मनुष्य अकर्मण्य बनता है और उत्पादन से हाथ सिकोड़ता है। हर व्यक्ति को राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ाने के लिए अथक परिश्रम करना चाहिए। अंतर इतना ही है कि वह उपार्जन एकाकी उपयोग में न लगाकर, सार्वजनीन हित-साधन में लगाता रहे। निषेध एकाकी उपयोग का है, उसी के संबंध में कहा गया है कि "जो आप ही कमाता और आप ही खाता है वह चोर है।" यह अध्यात्म सम्मत अर्थनीति ही व्यक्ति और समाज की सुख-शांति में वृद्धि कर सकती है और इसी को अपनाकर, अर्थ संकट से सदा के लिए छुटकारा पाया जाता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

(४) चौथी समस्या पारिवारिक है। गृह-कलह से लोग अशांत पाये जाते हैं। ऐसे परिवार थोड़े-से ही मिलेंगे जिनमें स्नेह, सौजन्य, सद्‌भाव, सहयोग का वातावरण हो और छोटे-छोटे घरों में स्वर्गीय हर्षोल्लास का जीवन जिया जा रहा हो। बाहर से एक दिखते हुए भी मनोमालिन्य, असहयोग, उपेक्षा, अवज्ञा, आपाधापी की स्थिति बनी रहती है और अनुशासनहीनता पनपती रहती है। इन कारणों से परिवार संस्था नष्ट-भ्रष्ट होती चली जा रही है।

परिवार संस्था का महत्त्व समझा जाना चाहिए। व्यक्ति और समाज के बीच की कड़ी परिवार है। यही वह खदान है जिसका वातावरण सुसंस्कृत बना रहे, तो नर-रत्न निकलते रहेंगे। अपना गौरव और राष्ट्र का वर्चस्व बढ़ाते रहेंगे। परिवार घटकों का समूह ही समाज है। स्कूली शिक्षा से जानकारी भर बढ़ती है। गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर बनने वाला चरित्र तो परिवार की पाठशाला में ही बनता है। इसी व्यायामशाला में अभ्यास करके, व्यक्तित्व ढालने की प्रक्रिया संपन्न होती है। इन तथ्यों की उपेक्षा कर देने के, दुष्परिणाम ही पारिवारिक समस्याओं के रूप में सामने आते हैं।

आज परिवार की आर्थिक आवश्यकता पूरी करने भर का ध्यान रखा जाता है। अच्छा खिला-पहना दिया, पढ़ाई और शादी के साधन जुटा दिए, उत्तराधिकारियों के लिए धन छोड़ दिया तो पारिवारिक उत्तरदायित्वों की इतिश्री समझ ली गई। इसका अर्थ तो यह हुआ कि परिवार के सदस्य भौतिक यंत्र मात्र हैं, जिनकी आवश्यकताएँ भौतिक-साधनों तक जुटा दिया जाना पर्याप्त है। मोटर के लिए पेट्रोल, लुबरीकेशन, ग्रीस, पानी आदि जुटा देना पर्याप्त है, पर मनुष्य मशीन तो नहीं है। उसके भीतर जीवन और चेतना भी है। उस कल्पवृक्ष का पनपना और परिष्कृत बनना सद्‌भावना और सत्प्रवृत्तियों का खाद पानी पाकर ही संभव हो सकता है। यह साधन जुटाए जा सके, तो गरीबी में रहते हुए भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

किसी परिवार के सदस्य नैष्ठिक नागरिकों की—श्रेष्ठ सज्जनों की श्रेणी में गिने जा सकने योग्य बन सकते हैं।

परिवारों के सृजन और परिपोषण के लिए अध्यात्म दृष्टिकोण से ही तो परिस्थितियाँ ऐसी बनेंगी, जिसमें पलने वाले आजीवन अपने सौभाग्य को सराहते रहेंगे। विवाह वासना के लिए नहीं, विशुद्ध रूप से दो आत्माओं के बीच घनिष्ठता, मैत्री एवं सहयोग के लिए किए जाएँ और उसी आदर्श को दोनों पक्ष निबाहें तो निश्चित रूप से उनके बीच उच्चस्तरीय आत्मीयता विकसित होगी। वे दोनों हर स्थिति में संतुष्ट रहेंगे और कर्तव्य, उत्तरदायित्व को समझते हुए पूरे परिवार को समुन्नत बनाने में जुटे रहेंगे। ऐसे लोग संतानोत्पादन के लिए लालायित नहीं हो सकते। वे स्वतः ही समझेंगे कि घर के बड़ों की सेवा, बराबर वालों का सहयोग और छोटों को अनुदान देने की जिम्मेदारियाँ पूरा करना आवश्यक है। उनकी पूर्ति के लिए ही जब पर्याप्त धन और समय नहीं है तो अनावश्यक अतिथियों को घुसपैठ क्यों करने दी जाए ?

आधुनिक वातावरण में पनप रहे परिवारों में आये दिन खींचतान, आपाधापी, द्वेष-दुर्भाव का विकृत वातावरण बना रहता है। फलतः उस घुटन में जो भी रहते-पलते हैं दुर्बुद्धि ग्रसित होते जाते हैं। यदि इस स्थिति को बदला जा सके और इस पाठशाला में सद्भावना और सत्प्रवृत्तियों के आधार पर दैनिक कार्य व्यवहार का ढाँचा खड़ा किया जा सके, तो घर का हर व्यक्ति नित्य नियमित रूप से श्रमशीलता, स्वच्छता, मधुरता, मितव्ययिता, सहकारिता, सेवा, सहायता, ईमानदारी, कर्तव्यपरायणता जैसे सद्गुणों को अपनाता और पनपता चला जायेगा। परिवारों की नर्सरी में ठीक तरह उगाया गया पौधा जिस बगीचे में भी लगेगा, जहाँ भी फलेगा-फूलेगा और अपने सुंदर फूलों और मधुर फलों से लदा हुआ वातावरण उत्पन्न करेगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

परिवारों का सृजन और संचालन अध्यात्म दृष्टिकोण अपनाकर किया जाए, तो उसमें सद्भावना हिलोरें ले रही होंगी, सत्परंपराएँ पनप रही होंगी और उसमें रहने, पलने वाले अपने को धन्य अनुभव कर रहे होंगे, किंतु यदि वासना के लिए विवाह, मोह के लिए संतान, लोभ के लिए उपार्जन और अहंकार का आधिपत्य चरितार्थ किया जा रहा होगा, तो हर घर में नारकीय वातावरण ही बना रहेगा और उसमें दम घुटने जैसी व्यथा सहन करते हुए हर सदस्य क्रमशः अधिक विकृत ही बन रहा होगा।

इस भौतिकवादी दृष्टिकोण ने पाश्चात्य देशों में परिवार संस्था का दम घोंट दिया। वहाँ वासना के लिए विवाह होते हैं और इसी पशु प्रवृत्ति से टकराकर हरदिन जोड़े जुड़ते-बिछुड़ते हैं। पति-पत्नी में से किसी को विश्वास नहीं होता कि हम लोगों का आज का सहचरत्व कल तक भी स्थिर रह सकेगा या नहीं। अविश्वास और अनिश्चय से भरे दंपत्ति जीवन कितने नीरस, कितने अस्थिर, कितने बनावटी होते हैं और पति-पत्नी के बीच कितनी बड़ी दीवार खड़ी रहती है, इसे कोई उन तथाकथित सभ्य लोगों के बीच रहकर भली प्रकार देख सकता है। अभिभावकों को अपनी संतान की अवज्ञा मिलती है और संतान को अभिभावकों की उपेक्षा। ऐसी दशा में संयुक्त परिवारों का वह स्वर्गीय वातावरण कैसे स्थिर रह सकता है, जो भारत की अपनी मौलिकता और अपनी विशेषता है। जिसके लिए आज भी समस्त संसार की आशा भरी दृष्टि लगी हुई है और सोचा जा रहा है कि इसी पद्धति को पुनर्जीवित करके, व्यक्ति का निर्माण और समाज का विकास संभव है।

परिवार संस्था को नव जीवन मिल सके तो वह अपने छोटे-छोटे घरौंदे—स्वर्गीय अनुभूतियों को अपनी इसी धरती पर दृश्यमान कर सकते हैं। यह नर-जीवन, गृह-विज्ञान के नाम से

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

प्रचलित सुव्यवस्था और सुसज्जा का प्रकरण पूरा कर लेने भर से नहीं मिल सकता, इसके लिए अध्यात्म दृष्टिकोण का गहराई तक समावेश करना होगा। घर की आदर्शवादिता की प्रयोगशाला, पाठशाला, व्यायामशाला के रूप में विकसित करना होगा। आहार-विहार से लेकर दैनिक क्रियाकलाप और पारस्परिक व्यवहार में ऐसे सूत्रों का समन्वय करना पड़ेगा, जिसके सहारे परिवार के सदस्यों में से हर एक को उत्कृष्ट चिंतन एवं आदर्श कर्तृत्व अपनाने के लिए अदम्य उत्साह पैदा हो सके।

धन अपनी जगह उपयोगी हो सकता है, सुव्यवस्था को भी सराहा जा सकता है, पर स्मरण रहे इतने भर से ही परिवार संस्था प्राणवान् न हो सकेगी। नई उच्च शिक्षा दिलाकर संतान को कमाऊ पूत बना देना उचित है। उनके लिए प्रचुर साधन जुटा देने का भी महत्त्व हो सकता है, पर ध्यान रहे यदि उनमें सद्गुणों का बीजारोपण न हो सका—सद्भावनाएँ विकसित न की जा सकीं, न स्वभाव में सज्जनता का समावेश हुआ, तो वे समृद्ध बन जाने पर भी व्यक्तित्व घटिया रहने पर सदा उलझनों में ही उलझे रहेंगे। स्वयं कुढ़ते रहेंगे और साथियों को भी कुढ़ाते रहेंगे। ऐसे व्यक्ति न स्वयं चैन से रहते हैं और न संपर्क में आने वाले किसी को चैन से रहने देते हैं। स्वयं गिरते हैं और साथियों को भी गिराते हैं। ऐसी पीढ़ियाँ बढ़ाकर कोई मिथ्या अहंकार भले ही कर ले कि हमने पीढ़ियों को पदवीधारी या कमाऊ बना दिया, पर वस्तुतः ऐसे उत्पादन पर किसी की आत्मा गर्व अनुभव नहीं कर सकती। परिवार तो वही धन्य है, जिनमें से श्रेष्ठ परंपराओं का निर्वाह कर सकने वाले चरित्र बल आदर्शवादी नर-रत्नों का उद्भव हो सके। ऐसे सुसंस्कृत परिवार केवल वही बन सकते हैं, जिनमें अध्यात्म दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी गई हो। इसकी उपेक्षा की जाती रहे तो फिर यह सोचना व्यर्थ है कि भारत के प्राचीन आदर्शों की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मूर्तिमान प्रयोगशाला के रूप में स्वर्गीय उल्लास की प्रतिच्छवि प्रस्तुत करने वाले देव मंदिरों के रूप हमें अपने परिवारों को विकसित कर सकने का सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा।

परिवार संस्था को यदि सच्चे अर्थों में जीवित रखना, उसे मात्र भेड़ों का बाड़ा नहीं रहने देना है, तो रास्ता एक ही है कि उसका सुनियोजन और संचालन अध्यात्म आदर्शों की प्रमुखता देते हुए किया जाए। शरीर के अवयवों जैसा पारस्परिक सघन सहयोग, घर के सदस्यों के बीच पनपते अधिकारों की उपेक्षा और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता का आदर्श यदि परिवार का हर व्यक्ति निबाहे तो उस उद्यान के सभी पेड़-पौधे शोभा-सुषमा से हरे-भरे दिखाई पड़ेंगे। अपने सुगंध-सौंदर्य से सारे वातावरण को हर्षोल्लास से भर रहे होंगे।

(५) व्यक्तिगत जीवन की पाँचवीं समस्या आत्मिक विकास की है। आत्मिक जीवन में परमात्मा का अनुग्रह, आंतरिक शांति, आत्म संतोष एवं आत्म लाभ होने की तृप्ति को सफलता का चिह्न माना जाता है। सिद्धियाँ और चमत्कार इसी स्तर पर पहुँचे हुए व्यक्तियों में देखे जाते हैं। वे महामानव बनते हैं। जीवात्मा के महात्मा, देवात्मा और परमात्मा के स्तर पर विकसित होने का लाभ इसी मार्ग पर चलते रहने वालों को प्राप्त होता है। स्वर्ग और मुक्ति का आनंद इसी प्रगति के साथ संबद्ध है। जीवन लक्ष्य की पूर्ति के लिए आत्मशक्ति को प्राप्त करना होता है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए पूजा-उपासना के उपचार काम में लाए जाते हैं, जो उचित भी है और आवश्यक भी। किंतु यह ध्यान में रखा जाए कि यह उपचारात्मक कर्मकांड साध्य नहीं साधन है। इनका उद्देश्य अंतरात्मा के गहन स्तर में अध्यात्म की आस्थाओं के लिए जगह बनाना और उन्हें विकसित होने की पृष्ठभूमि बनाना भर है। चापलूसी करने, प्रलोभन देने या रिझाने

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वाले उपक्रम बनाने में उस परमात्म सत्ता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जो सर्वांतर्यामी और सृष्टि संचालक होने की महानता धारण किये हुए हैं। उसे उपचारात्मक बालक्रीड़ाओं में वशवर्ती नहीं किया जा सकता।

ईश्वरीय अनुग्रह प्राप्त करने का अंतरात्मा में परमात्मा के अवतरण का एक मात्र आधार एक ही है कि दोनों का स्तर एक जैसा हो। सजातीय ही आपस में घुलते हैं। दूध में पानी मिल सकता है। संतों का संत समागम होता है और दुष्टों की दुर्जन गोष्ठी दुरभिसंधियाँ रचती हैं। ईश्वर की समीपता का लाभ उसी स्तर की मनोभूमि बनाए बिना और किसी प्रकार संभव नहीं हो सकता। आत्मशांति, आत्मिक प्रगति और आत्मशक्ति के कारण दिव्य जीवन का लाभ मिलता है और उसी के सहारे उन विभूतियों की उपलब्धि होती है, जो ईश्वर अनुग्रह के कारण मिलने वाली फलश्रुतियों के रूप में समझी, समझाई और बताई जाती हैं।

आत्मा और परमात्मा के बीच की दीवारें कलुष-कषायों के ईंट से चुनी गई हैं। दोनों अति समीप होते हुए भी अति दूर इसीलिए बने हुए है कि अपनाई गई असुरता खाई बनकर बीच में अड़ गई है। इसे पाटे बिना दोनों का मिलन संभव नहीं। अंगारों पर राख की परत जम जाती है, तो वह देखने में काला लगता है और छूने में गुनगुना भर रहता है। यदि इस परत को हटा दिया जाए तो अंगारा फिर पूर्व स्थिति में आ जायेगा और उसकी चमक तथा गर्मी वैसी ही दृष्टिगोचर होगी जैसी कि पहले रहती थी। आत्मा-परमात्मा का अंश है। अंश में अंशी की सारी विशेषताएँ विद्यमान हैं। विक्षेप उसी अवांछनीयता द्वारा उत्पन्न किया हुआ है; जिसे माया, भ्रांति, अज्ञान-आवरण आदि के नामों से पुकारते हैं।

पूजा-पाठ की आरंभिक और योग-तप की उच्च स्तरीय उपासना पद्धति बताई और अपनाई जाती है। गहराई से देखने पर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

इस समूची प्रक्रिया का उद्देश्य आत्म-सुधार और आत्म परिष्कार के लिए अंतःभूमिका में अभीष्ट पृष्ठभूमि बनाना भर है, जिसकी उपासना इस मूल प्रयोजन को जितनी मात्रा में पूरा कर देती है, उसे उतनी ही मात्रा में आत्मोत्कर्ष का लाभ मिलता है। इस आत्मोत्कर्ष को ही दूसरे शब्दों में आत्म साक्षात्कार एवं ईश्वरीय अनुग्रह के नाम से पुकारा जाता है। जिसकी उपासना इस मूल प्रयोजन को पूरा नहीं करती, रिझाने वाले उपचारों तक भटकती रहती है, उसके पल्ले कुछ पड़ता नहीं। ऐसे ही लोग साधना की निरर्थकता का रोना रोते और असफलता की शिकायत करते पाए जाते हैं। पूजा-उपचारों से देवता के प्रसन्न होने और मनचाहे वरदान देने की आशा लगाए रहने वाले व्यक्ति भ्रांतियों की भूलभुलैयों में चक्कर भर काटते रहते हैं, उन्हें वह लाभ नहीं मिलता जो आत्म-साधना से मिल सकता है, मिलता रहा है।

आत्म-चिंतन, आत्म-सुधार, आत्म-निर्माण और आत्म-विकास की चार दीवारों पर आत्मिक प्रगति का भवन खड़ा होता है। हवाई किला बनाकर, कल्पना की उड़ानें तो उड़ी जा सकती हैं, पर यदि मजबूत महल बनाना है और उसमें निवास करने का वास्तविक आनंद लेना हो तो जमीन पर उसकी सुदृढ़ आधारशिला रखी जानी चाहिए। ईश्वरीय अनुग्रह की अमृत वर्षा तो सर्वत्र अनवरत रूप में होती रहती है; उसके लिए माँगने कहीं नहीं जाना है और अनुरोध-आग्रह किसी से नहीं करना है। साधना का उद्देश्य एक ही है, आत्मशोधन। दुष्कर्म से स्थूल शरीर, दुर्बुद्धि से सूक्ष्म शरीर और दुर्भावों के कारण शरीर में विकृतियाँ भर जाती हैं और समूचा व्यक्तित्व पतन के गर्त में जा गिरता है। इसी दुर्गति के खड्ड में पड़े हुए लोग नित्य उदय होने वाले सूर्य के प्रकाश से वंचित रहते हैं। ईश्वरीय अनुग्रह से वंचित रहते हैं। ईश्वरीय अनुग्रह से वंचित रहने का कारण हमारी अपनी ही विकृतियाँ होती हैं। कठोर चट्टान

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

पर अनवरत वर्षा होते हुए भी हरियाली उत्पन्न नहीं होती। इसमें बादलों से अनुरोध करना व्यर्थ है। चट्टान को ही कोमल रेत में बदलना पड़ेगा।

ईश्वर से विविध विधि प्रार्थनाएँ की जाती हैं। उपासनाओं के अनेकानेक विधि-विधान हैं। इनमें प्रकारांतर से आत्मशोधन के सभी संकेतों की ही भरमार है। वेदांत दर्शन के अनुसार अपना परिष्कृत आत्मा ही परमात्मा है। यह परिष्कार ही साधना विज्ञान की पृष्ठभूमि है। ब्रह्मविद्या के अंतर्गत तत्त्वज्ञान की सुविस्तृत विवेचना के लिए दर्शनशास्त्र का सृजन हुआ है। उसके अनेक निर्धारणों पर पैनी दृष्टि डाली जांए और खोजा जाए कि आध्यात्मिक जीवन का इतना विशालकाय कलेवर किसलिए खड़ा किया गया है ? तो इस प्रश्न के उत्तर में एक ही निष्कर्ष उभरकर आयेगा कि अंतकरण: पर चढ़ी हुई पशु-प्रवृत्तियों को निरस्त करके उस जगह दैवी-विभूतियों को, उच्चस्तरीय आस्थाओं को प्रतिष्ठापित किया जाए। यही एकमात्र वह मार्ग है जिस पर चलते हुए आत्मा को परमात्मा बनने का अवसर प्राप्त होता है। नर से नारायण, पुरुष से पुरुषोत्तम, अणु से विभु, लघु से महान् बनने का एक ही उपाय है कि अपनी तुच्छताओं, संकीर्णताओं, दुर्बलताओं की बेड़ियाँ काट डाली जाएँ और महानता के उन्मुक्त आकाश में विचरण किया जाए।

धुँधले दर्पण में मुँह दिखाई नहीं पड़ता—गंदले पानी की तली में पड़ी हुई वस्तु ओझल रहती है, अंतर की मलीनताओं के कारण ही आत्मा मूर्छित पड़ी रहती है और परमात्मा खोजने से भी नहीं मिलता। वासना और तृष्णा के आवरण आँखों पर पट्टी बाँधे रहते हैं। लोभ, मोह के रस्से भव-बंधनों में जकड़े रहते हैं। संकीर्ण स्वार्थपरता का ग्रह ही जीव रूप गज को अपने मुँह में निगले रहता है। इनसे छुटकारा मिल सके और उदात्त चिंतन को दृष्टि मिल

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सके तो समझना चाहिए कि जीवन मुक्त हो गया, मुक्ति मिल गई। परिष्कृत दृष्टिकोण का नाम ही स्वर्ग है। जो अपनी मौलिक गरिमा को समझ सका, विश्व उद्यान में अपनी माली जैसा कर्तव्य परायणता निश्चित कर सका, अपनी बहिरंग एवं अंतरंग गतिविधियों को उच्चस्तरीय बना सका, समझना चाहिए, उसने अधिभौतिक, अधिदैविक और आध्यात्मिक व्यथा-वेदनाओं की नरक वैतरणी पार कर ली और स्वर्ग के राज्य का आधिपत्य प्राप्त कर लिया। स्वर्ग एवं मुक्ति उस विवेक सम्मत दूरदर्शी दृष्टिकोण में सन्निहित है, जिसे अध्यात्म के नाम से जाना माना जाता है।

महामानव, सिद्ध पुरुष, महात्मा, देवात्मा, अवतारी चमत्कारी आदि के नाम से जिन विशिष्ट आत्माओं के चरणों में जन साधारण की श्रद्धांजलि अर्पित होती है। जो स्वयं भार ढोते और दूसरों को अपनी नाव पर बिठाकर भवसागर से पार लगाते हैं, इन्हें ही ऋषि एवं देवमानव कहते हैं। इनकी एक ही विशेषता, एक ही सफलता होती है कि उन्होंने अपने कषाय-कल्मषों को धो डाला है। क्षुद्रता का परित्याग कर महानता को अपना लिया है। ऐसे आप्त पुरुषों में भगवान् की दिव्य ज्योति आलोकित पाई जाती है और उनके संपर्क में आने वालों को पारस छूकर, लोहे का सोना बनने जैसा लाभ प्राप्त होता है।

महामानवों का सहयोग देवताओं का वरदान, ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिकता को व्यवहारिक जीवन में उतारने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। मनुष्य जीवन की पाँचवी सफलता है- आत्मिक प्रगति के अवरोध का निवारण। इसी उलझन के कारण मनुष्य की पशु जीवन जीना पड़ता है और नारकीय यातनाएँ सहनी पड़ती हैं। इसका समाधान भी आध्यात्मिक आदर्शों को अपना लेने के अतिरिक्त और किसी प्रकार संभव नहीं हो सकता।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

यदि हम जीवन की उलझनें सुलझाना चाहते हैं, समस्याओं का हल पाना चाहते हैं तो अध्यात्म की रीति-नीति अपनाने के लिए साहस जुटाना चाहिए। इसी पथ पर चलते हुए मनुष्य जीवन का सच्चा आनंद और सच्चा लाभ लिया जा सकता है।

सुखी जीवन का उपाय एक ही है, समस्त समस्याओं का समाधान एक ही है कि हमारी आस्था बदलें, उसमें उत्कृष्टता का अधिकाधिक समावेश हो और उसका प्रतिफल व्यक्तित्व में बढ़ते हुए देवत्व के रूप में परिलक्षित हो। देव समाज के लिए स्वर्गीय परिस्थितियाँ सुरक्षित हैं। संत इमर्सन कहते थे कि "मुझे नरक में भेज दो, मैं वहीं अपने लिए स्वर्ग बना लूँगा।" उनका यह दावा मिथ्या नहीं था। उत्कृष्टतावादी के लिए सामान्य परिस्थितियों में भी स्वर्गीय सुख-शांति का सृजन कर सकना नितांत सरल, स्वाभाविक एवं संभव है। यदि हम आध्यात्मवादी रीति-नीति अपना सकें तो निश्चित रूप से वर्तमान जीवन में प्रस्तुत अनेकानेक समस्याओं का समाधान पा सकते हैं।

❑ ❑

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

२. सामाजिक संदर्भ में

यह संसार भगवान् का सुरम्य उद्यान है। मनुष्य उसका ज्येष्ठपुत्र राजकुमार। उसे इस उपवन की उल्लास भरी सैर करने भेजा है और पर्याप्त सुविधा-साधन देकर, यहाँ की परिस्थितियाँ अधिक अच्छी बनाने में कुशलता दिखाने का काम सौंपा गया है। इस स्थिति में मनुष्य प्राणी को निरंतर ही हर्षोल्लास ही हर्षोल्लास की अनुभूति होनी चाहिए। बुद्धि-वैभव में वह क्षमता है कि मरुस्थल में फूल खिला सके, फिर क्या कारण है कि उससे संपन्न होते हुए भी मनुष्य को रोना-रुलाना, कलपना-कलपाना पाया जाता है ?

सृष्टि में सर्वश्रेष्ठ व्यक्तित्व पाने वाला मनुष्य-प्राणी इस धरती को स्वर्ग बना सकने की संभावनाओं में पूरी तरह सुसज्जित है। यहाँ निर्वाह ही नहीं आनंद और उल्लास के प्रचुर साधन पग-पग पर उपलब्ध हैं। मनुष्य का इस पृथ्वी पर एकछत्र राज्य है। उसकी उपलब्धियों पर आश्चर्य प्रकट किया जाता है, किंतु इससे भी बड़े आश्चर्य की बात यह है कि हर समस्या को सहज ही सुलझा सकने में समर्थ मनुष्य को किस कारण इतनी अधिक गुत्थियों में जकड़ना पड़ा है, जो सुलझाने में नहीं आती और डरावनी काली घटाओं की तरह निरंतर अधिक सघन होती चली आती हैं।

प्रगति के नाम पर जहाँ मनुष्य ने अनेक वस्तुएँ कमाई हैं, वहाँ समस्याएँ भी कम नहीं बढ़ाई हैं, कठिनाइयों में भी कम उन्नति नहीं की है। अब से कुछ शताब्दी पूर्व तक मनुष्य इतने व्यथित और निराश नहीं थे जितने कि अपने प्रगतिशील कहे जाने वाले समय में उत्पन्न हुए हम लोग हैं। तब साधन भले ही कम रहे हों पर लोग मिल-जुलकर रहते थे और एक-दूसरे के प्रति सहयोग-

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सद्भाव की उदार आत्मीयता अपनाकर अधिक सुखी और संतुष्ट रहते थे। लगता है वह सौभाग्य अपने हाथों से कोई और महादैत्य क्रमशः छीनता ही चला जा रहा है।

सिंह-व्याघ्र के आक्रमण—आतंक की बात समझ में आती है। साँप-बिच्छू का, प्रकृति-प्रकोप का भय समझ में आता है, पर मनुष्य ही मनुष्य के शोषण का शिकार बने, मनुष्य ही मनुष्य का रक्तपान करने में संलग्न दिखाई पड़े—मनुष्य को मनुष्य के ही आतंक से काँपना पड़े, यह स्थिति अत्यंत विलक्षण है। सहकारी स्वभाव का होने पर भी अपराधों और आक्रमणों की धूम क्यों बनी रहे ? उस विचित्रता का उत्तर तो प्राप्त किया ही जाना चाहिए।

राजनीति के क्षेत्र में विग्रहों का अंत नहीं। शासन तंत्र चलाने वाले नेताओं के मस्तिष्क पर इतना दबाव रहता है कि वे चैन से एक दिन भी नहीं रह पाते। तनाव के कारण उनका स्वास्थ्य क्षीण होता जा रहा है और अधिकांश को अकाल में ही काल-कवलित होना पड़ता है। वे राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का हल खोजने के लिए ईमानदारी से प्रयत्न करते हैं, पर कुछ बन नहीं पाता। एक सिरे को ढकने की बात बन नहीं पाती कि दूसरा सिरा उघड़कर नई चिंता उत्पन्न कर देता है।

सामाजिक समस्याएँ भी अपने युग में कम नहीं हैं। समाज के मूर्धन्य व्यक्ति उनसे चिंतित हैं और समाधान के लिए अपने ढंग से प्रयत्न करते हैं, पर देखने में यही आ रहा है कि एक गुत्थी सुलझने नहीं पाती कि दूसरी नई उठकर खड़ी हो जाती है। एक रोग अच्छा नहीं हो पाता कि दूसरा नया उठ खड़ा होता है। एक युद्ध समाप्त होने नहीं पाता कि नये युद्ध की नींव पड़ जाती है।

यहाँ हमें समझना होगा कि समाज की कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं, व्यक्तियों का समूह ही समाज है। व्यक्ति जैसे होंगे वैसा ही समाज बनेगा। वैयक्तिक समस्याएँ ही इकट्ठी होकर सामाजिक

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

समस्याएँ बन जाती हैं। आज की परिस्थितियों में समाज और राष्ट्र एक ही बात है। किसी जमाने में वे दो भी थे पर आज तो सामाजिक परंपराओं को राष्ट्रीय मानकर, चलने में किसी को कोई बड़ी आपत्ति नहीं है। सामाजिक-राष्ट्रीय ही नहीं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी प्रस्तुत असंख्य समस्याओं का वर्गीकरण किया जाए तो उन्हें पाँच भागों में विभक्त किया जा सकता है— (१) जन स्वास्थ्य की समस्या (२) अपराध और युद्ध (३) आर्थिक असंतुलन संपत्ति की कमी। (४) बढ़ती हुई जनसंख्या (५) स्वार्थपरता और विकृत आग्रह। इन पाँचों के अंतर्गत उन समस्त समस्याओं को लिया जा सकता है, जो अनेक राष्ट्रों के सामने अनेक आकृति प्रकृति की बनकर सामने आती रहती है। इन्हीं को सुलझाने के लिए समाजसेवी, बुद्धिजीवी, राजनेता, वैज्ञानिक अर्थशास्त्री विभिन्न ढंगों से सोचते, विभिन्न उपाय खोजते और विभिन्न कदम उठाते देखे जाते हैं। कल्याणकारी एवं सुरक्षात्मक योजनाओं का निर्धारण उन्हीं प्रयोजनों के लिए, संघ के मंच पर इन्हीं समाधानों के लिए अंतर्राष्ट्रीय प्रयत्न होते और कूटनीतिक आदान-प्रदान चलते हैं। इतने पर भी देखा यही जाता है कि बात कुछ बन नहीं रही है और वांछित समाधान निकल नहीं रहे हैं।

कुछ समय पहले यह समझा जाता था कि समृद्धि बढ़ने से समाज की इन समस्याओं का हल निकल आयेगा, किंतु यह प्रयोग सुसंपन्न कहे जाने वाले देशों में हो चुका है। अमेरिका और योरोप के अनेक देश भौतिक प्रगति के हर क्षेत्र में पिछड़े देशों की तुलना में अत्यधिक ऊँचाई तक बढ़ गए हैं। पर वहाँ के लोगों की अशांत मनः स्थिति, बढ़ती हुई अपराधी प्रवृत्ति तथा दूसरी सामाजिक विकृतियों को देखकर लगता है कि मात्र भौतिक उन्नति को सब कुछ मान बैठना भूल है। समुन्नत कहलाने वाले देशों में इन व्यक्तियों की संख्या दिन-दिन बढ़ रही है। जो थकान और तनाव

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की मनःस्थिति से निरंतर क्षुब्ध रहते हैं और नींद की गोली खाकर कुछ देर आधी अधूरी नींद ले पाते हैं। स्वाभाविक स्नेह-सद्भाव घट जाने से संयुक्त परिवार प्रणाली के आनंद को गँवा बैठे। अनिश्चित और अविश्वस्त दांपत्य जीवन को कृत्रिम आकर्षणों के सहारे मधुर बनाने के प्रयोग सर्वथा असफल हो रहे हैं और परिवार संस्था टूट रही है। रोज तलाक, रोज विवाह की विडंबना ने दांपत्य जीवन का आनंद ही नष्ट कर दिया। संतान और अभिभावकों के बीच स्नेह-श्रद्धा के सूत्र अत्यंत दुर्बल पड़ गए। पशु-पक्षियों में बच्चों और अभिभावकों का रिश्ता शिशु काल तक ही सीमित रहता है। समर्थ होते ही वह रिश्ता टूट जाता है। मनुष्य समाज में भी यही बात बढ़ रही है। विवाह का उद्देश्य काम-कौतुक बन रहा है। यह पशुता की ओर लौटना हुआ। फिर पशु-जीवन से बढ़कर पारिवारिक जीवन का आनंद भी कैसे मिलेगा ? भटका हुआ मनुष्य, निष्ठारहित, परिवार—आदर्शविहीन समाज की जो दुर्गति होनी चाहिए, उसे हम तथाकथित समृद्ध देशों के आंतरिक खोखलेपन में झाँककर देख सकते हैं। यों वहाँ भी भौतिक प्रगति के नगाड़े बज रहे हैं और उपलब्धियों की गर्वोक्तियाँ की जा रही हैं।

यह तथ्य ध्यान में रखा जाना चाहिए कि मान वीसत्ता दो भागों में विभक्त है—एक भौतिक, शरीर पक्ष है; दूसरा आत्मिक-चेतना का। भौतिक निर्वाह के लिए सुविधा-साधन चाहिए और आत्मिक संतोष के लिए आदर्शवादी वातावरण। दोनों साधन जहाँ जुटेंगे वहाँ सच्ची प्रगति मानी जा सकेगी और वहीं सुख-शांति की संभावना बढेगी। यहाँ एक बात और भी समझ लेने की है कि चेतना मुख्य है और कलेवर गौण। आत्मिक प्रगति के हित स्वल्प साधनों में भी हँसते-हँसाते ऋषि जीवन जिया जा सकता है, पर प्रचुर साधनों के होते हुए भी आंतरिक विकृतियाँ असुर स्तर के उद्वेग-अनाचारों का सृजन करती रहेंगी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

संपत्ति एक प्रकार की आग है, जिसे अध्यात्मवाद के चिमटे से ही पकड़ा जाना चाहिए। नंगे हाथ अंगार पकड़ लेने की चेष्टा में खतरा ही खतरा है। वासना, तृष्णा से, लोभ-मोह से, संकीर्ण स्वार्थपरता से घिरा हुआ व्यक्ति कितना ही साधन-संपन्न क्यों न हो अपनी उपलब्धियों का सदुपयोग न कर सकेगा। दुरुपयोग के दुष्परिणाम उसे पग-पग पर भुगतने पड़ेंगे। यही हो रहा है। हम अपनी प्रत्येक उलझन, समस्या, कठिनाई के पीछे उसी अनास्था को तांडव नृत्य करते देख सकते हैं।

राजतंत्र की समर्थसत्ता के माध्यम से समाधान निकालने की बात भी इसी पृष्ठभूमि पर सोची जा सकती है। आज सर्वत्र शासनतंत्र में जनतांत्रिक पद्धति ही कार्य कर रही है। इस स्थिति में जनसाधारण में आध्यात्मिक दृष्टि का विकास करके ही आदर्श शासन व्यवस्था की स्थापना संभव है। अपने मतदान का मूल्य और महत्त्व समझने वाले नागरिकों का चुना हुआ लोकतंत्र रामराज्य की स्थापना करता है और उसी से सतयुगी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं। अधिनायकवाद और राजतंत्र की बात दूसरी थी पर प्रजातंत्र में तो प्रजा ही अपने शासन की व्यवस्था आप करती है। भ्रष्ट प्रलोभनों और उद्देश्यों से प्रेरित होकर मतदान करने वाले वोटर ही वस्तुतः प्रजातंत्र की जड़ खोदते हैं और अवांछनीय शासनतंत्र खड़ा करने के लिए हावी होते हैं।

बात घूम-फिरकर वहीं आ जाती है कि उत्कृष्ट शासन का आधार विवेकवान् नागरिकों के दृष्टिकोण पर निर्भर है। शासन का स्वरूप कितना ही शक्तिशाली हो पर उसका संचालक नियुक्त करने का अधिकार तो मतदाताओं के हाथ में ही सुरक्षित रहता है। स्वस्थ प्रजातंत्र की स्थापना के लिए सर्वमान्य और सर्वोपरि उपाय एक ही है कि प्रजातंत्र के प्रजाजनों को अपने उत्तरदायित्व का

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भान हो और उसका उपयोग करते समय राष्ट्र को इस पवित्र थाती का पवित्रतम उपयोग करने की बात को ध्यान में रखें।

यह दृष्टि विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक कही जा सकती है। इसी बात को ऐसे भी कह सकते हैं कि स्वच्छ शासन की स्थापना उन प्रजाजनों के लिए ही संभव है, जिन्हें परिष्कृत दृष्टिकोण अपनाने वाले "अध्यात्मवादी" की संज्ञा दी जा सकती है। शासनतंत्र द्वारा राष्ट्रव्यापी-विश्वव्यापी समस्याओं का स्थिर समाधान इस पर निर्भर है कि नागरिकों, सरकारों और मूर्धन्य नेतृत्व द्वारा अध्यात्मवादी आदर्शों को किस सीमा तक अपनाया गया है ?

गहराई से देखा जाए तो ये सामाजिक समस्याएँ स्वतंत्र रूप में कुछ नहीं वैयक्तिक समस्याओं का ही सामूहिक रूप है। असंयम से व्यक्ति दुर्बल और रुग्ण पड़ता है। उसी को सामूहिक रूप से बीमारी, महामारी, अकाल मृत्यु की व्यापक समस्या कहा जा सकता है। मानसिक विकृतियाँ व्यक्तिगत जीवन में मनोविकारों और उद्वेगों के ग्रसित रहने एवं लड़ने-झगड़ने के लिए प्रेरित करती हैं। यही दुष्प्रवृत्ति सामूहिक जीवन में दो उपद्रवों का रूप धारण करती है और अपराधी दुष्प्रवृत्तियाँ अपनाने के लिए भड़काती है। उपद्रवों और अपराधों की राष्ट्रीय समस्या के प्रकारांतर में व्यक्तियों की दुर्बुद्धि का सामूहिक अभिशाप कहा जा सकता है।

व्यक्ति की दरिद्रता ही देश की गरीबी और व्यक्तिगत अनैतिक धन की आकांक्षा राष्ट्रीय अर्थ-असंतुलन का आधार है। सुसंस्कारी आधार से भटके हुए परिवार-कुत्साओं और कुंठाओं से घिरे रहते हैं। अविवेकपूर्वक बच्चों का अंधाधुंध उत्पादन राष्ट्रीय संकट बनकर खड़ा होता है। विकास के लिए जितने पैर पीछे जाते हैं, उससे ज्यादा नये रोजी-रोटी तथा सुविधा माँगने वाले उत्पन्न हो जाते हैं। विकास की उपलब्धियाँ नई आवश्यकता पूरी करने में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

सफल नहीं हो पातीं फलतः समस्याएँ जहाँ की तहाँ अड़ी बैठी रहती हैं।

व्यक्तिवाद के आधार पर पनपने वाली स्वार्थपरता समूह रूप से असंगठित और सहकारिता की उपेक्षा करने वाले प्रजाजनों की समस्या बनती है। मुनाफाखोरी, कामचोरी, करचोरी, आपाधापी, सार्वजनिक प्रयोजनों की उपेक्षा, सहकारिता में अनुत्साह, वर्ग-स्वार्थ और वर्ग-संघर्ष जैसे आचरणों से ही कोई देश दुर्बल बनता है। इन्हीं को किसी राष्ट्र का आंतरिक खोखलापन कहा जा सकता है। व्यक्तिगत जीवन में आत्मिक दुर्बलता को और सामूहिक जीवन में प्रजाजनों की चारित्रिक कमजोरी का नाम दिया जा सकता है। संक्षेप में व्यक्ति की छोटी दीखने वाली समस्याएँ ही सामूहिक रूप से विशालकाय राष्ट्रीय अथवा सामाजिक समस्याएँ कही जाती हैं। इन्हीं दुर्बलताओं से शिक्षा, संपत्ति आदि साधनों से संपन्न देश आंतरिक दृष्टि से दुर्बल बने रहते हैं। इसके विपरीत उन देशों में आंतरिक दृढ़ता, भावनात्मक एकता, साहसिक, प्रखरता एवं चरित्रनिष्ठा होती है। वे स्वल्प-साधनों के सहारे अपना वर्चस्व सिद्ध करते हैं और न अंतर्द्वंद्वों में टूटते हैं और न बाहरी आक्रमणों से हारते हैं।

जिन सत्प्रवृत्तियों की यहाँ चर्चा की जा रही है, उनको समन्वय की सामाजिक प्रखरता अथवा सामूहिक आध्यात्मिकता कह सकते हैं। कर्तव्य पालन के लिए जागरूक आदर्शों के प्रति निष्ठावान एवं उदार आत्मीयता से प्रेरित होकर सेवा सहायता के लिए आतुर उत्साह को आध्यात्मिकता माना गया है, यही है वह दिव्यक्षमता जिसे आत्मशक्ति कहते हैं। यही व्यक्ति को लौह पुरुष बनाती है और उसी के सहारे राष्ट्रों की सुरक्षा लौह प्राचीरों से भी अधिक सुनिश्चित बनी रहती है। पूर्व वर्णित पाँचों सामाजिक समस्याओं का हल इसी माध्यम से निकाल सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

(१) राष्ट्रीय अस्वस्थता की समस्या का समाधान करने के लिए साफ-सफाई, कृमिनाश एवं अस्पतालों का प्रबंध किया जाता है। सरकार अपनी आर्थिक स्थिति के अनुरूप कर्मचारियों की संख्या नियत रखती है और सुविधा-साधन जुटाती है, पर वे अस्पताल थोड़े-से ही बीमारों को भर्ती कर सकते हैं। जो इनसे लाभ उठाते हैं, उनकी तुलना में वे कहीं अधिक हैं, जिन्हें यातायात की तथा दूसरी कठिनाइयों के कारण वह सहायता नहीं मिल पाती। जो इनमें चिकित्सा कराते हैं, वे सभी अच्छे भी कहाँ हो पाते हैं। जो अच्छे हो जाएँ इनके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उन्हें उसी कष्ट की पुनरावृत्ति न होगी अथवा दूसरे नये रंगरूप का रोग फिर न उठ खड़ा होगा ?

यहाँ अस्पतालों की निरर्थकता नहीं बताई जा रही है और न यह कहा जा रहा है कि उन्हें न खोला जाए और लाभ न उठाया जाए। प्रतिपादन केवल इतना है कि यदि जन साधारण ने अप्राकृतिक जीवन न छोड़ा—आहार-विहार का असंयम न सुधारा तो उपचार केवल सामयिक चमत्कार उत्पन्न भले ही कर दे, स्वास्थ्य समस्या का स्थायी समाधान न निकलेगा। असंयमी लोग प्रकृति की अवज्ञा का दंड भुगतेंगे और आये दिन बीमार पड़ेंगे। नई बीमारी नई दवा का कुचक्र अपनी धुरी पर यथावत् घूमता रहेगा। संकट टलेगा नहीं।

सफाई कर्मचारी एक ओर कचरा साफ करेंगे, दूसरी ओर वहाँ रहने वाले अथवा उधर से निकलने वाले फिर गंदगी बरसाने लगेंगे। हर आदमी के साथ एक मेहतर घूमे तो बात दूसरी है अन्यथा गंदगी फैलाने की आदत सरकार की सफाई योजना को सफल न होने देगी। मक्खी, मच्छर आदि हानिकारक कीड़े गंदगी की उपज हैं। डी० डी० टी० से एक दिन जितने मच्छर मारे जाएँगे दूसरे दिन सड़ी गंदगी उतने ही नये पैदा कर देगी।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्वास्थ्य रक्षा के लिए जो उपाय किए जाते हैं वे आवश्यक तो हैं पर पर्याप्त नहीं। होना यह चाहिए कि शिक्षा संस्थाओं से लेकर धर्मतंत्र सहित प्रचार के प्रत्येक साधन में लोकमानस को स्वच्छता, संयम, श्रमनिष्ठा जैसी आरोग्यरक्षक आदतें सीखने के लिए प्रशिक्षित किया जाए। सामाजिक संगठन वैसा वातावरण बनाएँ और बीमार पड़ना भी एक अपराध घोषित किया जाए। बार-बार बीमार पड़ने वालों को दया का पात्र और सहायता का अधिकारी तो माना जाए, पर साथ ही उनकी असावधानी और अव्यवस्थिता को कड़ाई से कसा भी जाए। जितने प्रयत्न गंदगी साफ करने के लिए किए जाते हैं, जितने प्रबंध चिकित्सा उपचार के होते हैं, उससे भी अधिक प्रयत्न इस स्तर के होने चाहिए कि हर मनुष्य स्वच्छता, संयम, श्रमनिष्ठा जैसे आधारों का महत्त्व ही न समझें वरन् उन्हें जीवन नीति का अंग मानकर चलें। यह कार्य कठिन कहा जा सकता है, पर उतना कठिन नहीं है जितनी कि अस्वस्थता के कारण उत्पन्न होने वाली रुग्णताजन्य पीड़ा और आर्थिक हानि। समस्या के कारण को समझा जाए और उसका स्थिर समाधान ढूँढ़ा जाए तो एकमात्र यही निष्कर्ष निकलेगा कि जीवन यापन की उस पद्धति को अपनाया जाए, जिसे शरीर क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली अध्यात्मिकता कहा जा सकता है। अध्यात्म एक मान्यता है जो विभिन्न क्षेत्र में, विभिन्न रूपों में परिलक्षित होती है। शरीरक्षेत्र में बरती जाने वाली सतर्कता और संयमशीलता को अध्यात्म की प्रेरणा कही जायेगी। यही है वह आधार जिसे अपनाकर स्वास्थ्य संकट से सदा-सर्वदा के लिए छुटकारा मिल सकता है।

(२) मानसिक उद्वेगों से पीड़ित व्यक्ति उद्धत आचरण करते हैं। अपना स्तर गिराते हैं और दूसरों को कष्ट देते हैं। कभी-कभी मर्यादाओं के लिए अनास्थावान् बनकर ऐसे लोग मानवी और सामाजिक शील-सदाचार को रौंदते हुए अपराधी बनते, गुंडागर्दी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अपनाते, आतंक उत्पन्न करते और चोरी ठगी पर उतारू पाए जाते हैं। नृशंस-क्रूर कर्म करने में भी उन्हें संकोच नहीं होता। इस प्रकार के उद्धत आचरण रोकने के लिए पागलखाने, जेलखाने बनाए गए हैं और उन्हें रोकने पकड़ने की व्यवस्था की गई है। पर देखना यह है कि क्या यह प्रतिबंधात्मक उपाय पर्याप्त है। देखा यही जाता है कि कड़े कानून, कठोर दंड और अपराध सूत्रों की खोजबीन की व्यवस्था रहते हुए भी वे दुष्प्रवृत्तियाँ रुक नहीं रही हैं। आत्महनन से लेकर परपीड़न तक के वर्गों में विभाजित होने वाले अपराध घट नहीं बढ़ ही रहे हैं। दंड भय से बच निकलने की असंख्य तदवीरें सोची और निकाली जाती रहती हैं और छिपे एवं खुले रूप में वह सब होता रहता है, जिसे रोकने के लिए खर्चीले एवं कुशलतापूर्ण उपाय करते जाते हैं।

यहाँ भी दंडनीति एवं रोकथाम के प्रयत्नों का उपहास नहीं उड़ाया जा रहा और न उन्हें अनावश्यक ठहराया जा रहा है। वे प्रयत्न तो होने ही चाहिए वरन् उन्हें अधिक विस्तृत एवं प्रामाणिक किया जाना चाहिए। सोचने की बात इतनी भर है कि क्या मनुष्य की दुर्बुद्धि से उत्पन्न अनाचारों-दुष्प्रवृत्तियों पर अंकुश लगाने के लिए कानूनी पकड़ पर्याप्त है ? यह तभी हो सकता है जब हर आदमी के पीछे एक पुलिसमैन लगाया जाए और वह पुलिसमैन भी किसी अन्य लोक का निवासी हो।

अपराध मात्र उतने ही नहीं हैं। जितने न्याय संहिता में दंडनीय ठहराए गए हैं। छोटे और व्यक्तिगत अपराधों पर कानूनी अंकुश नहीं है। नशा पीना, असंयम बरतना, अस्वच्छ रहना, अनुशासनहीनता, अस्त-व्यस्तता, आलस्य-प्रमाद, कटुभाषण, अशिष्ट आचरण, दुर्व्यसन, द्वेष, दुर्भाव, जैसे व्यक्तिगत अवांछनीयताओं पर सरकारी अंकुश नहीं है। पर वे आदतें व्यक्ति और समाज के लिए कम हानिकारक नहीं होतीं। यह अवांछनीयताएँ ही बढ़कर

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

विक्षोभकारी विभीषिकाएँ उत्पन्न करती हैं। ऐसी ही छोटी-छोटी बाते व्यक्ति को गया-गुजरा बनातीं और समाज को खोखला करती हैं। पागल की तोड़-फोड़ हमें चौंकाती है, पर सनकी एवं उद्धत प्रकृति के मनुष्य धीरे-धीरे कितनी विसंगतियाँ खड़ी कर देते हैं, उसे खोजा जाए तो और भी अधिक हानि हुई दृष्टिगोचर होगी।

अग्निकांड से शहतीर जल जाने की चर्चा होती है पर घुन द्वारा उसे खोखला करके, धराशाई बनाने देने को सामान्य कहकर टाल दिया जाता है। बड़े अपराधों की भयंकरता सर्वविदित है किंतु छोटे अपराध जिन्हें नैतिक एवं नागरिक मर्यादाओं का उल्लंघन कह सकते हैं, कम भयानक नहीं है। खेत को हिरन चर गये अथवा फसल को कीड़ों ने साफ कर दिया, विश्लेषण की दृष्टि से दो प्रसंग हो सकते हैं, पर हानि की दृष्टि से दोनों को ही समान रूप से हानिकारक ठहराया जायेगा। अवांछनीयता हो या अपराधी दुष्प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति और समाज को असामान्य क्षति उठानी पड़ती है।

इनका नियंत्रण जन साधारण का दृष्टिकोण बदलने से ही संभव होगा। आस्तिकता, आध्यात्मिकता, धार्मिकता की आस्थाएँ ही अंतःकरण को परिष्कृत करती हैं और उन्हीं की प्रेरणा से मनुष्य सज्जनता अपनाने के लिए विवश होता है। सुसंस्कृत व्यक्ति पर न सामाजिक अंकुश की आवश्यकता पड़ती है और न सरकारी रोकथाम की। वह आंतरिक सदाशयता से प्रेरित रहता है, अपना स्तर ऊँचा उठाता है और दूसरों को हानि पहुँचाना तो दूर उलटे लोकमंगल के अनेक आधार खड़े करता है।

बढ़ती हुई अनैतिकता का विकसित रूप अपराधों की बाढ़ के रूप में देखा जा सकता है। इसे न संपन्नता रोक सकती है न दंडनीति। अमेरिका की साधन संपन्नता सर्वविदित है फिर भी वहाँ अपराधों का ज्वार ऊपर उठ रहा है। दंडनीति में कमी कहाँ है ?

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

हर अपराध के विरुद्ध कड़े कानून मौजूद हैं। फिर भी जेलखानों के भीतर तक अपराध होते रहते हैं। सामयिक उपचार जो हो रहे हैं वे उत्साहपूर्वक काम में लाए जाएँ पर साथ ही यह आवश्यकता भी समझी जाए कि मानवी अतःकरण को सुसंस्कृत बनाने के लिए समस्त साधन झोंक दिये जाएँ। चिकित्सा पर होने वाले खर्च की तुलना में अन्न, वस्त्र का खर्च स्वभावतः अधिक होता है। अपराधों की रोकथाम और अपराधियों को दंड देने पर जितना ध्यान दिया और खर्च किया जाता है, उससे कम नहीं अधिक ही प्रयत्न सभ्यता एवं संस्कृति को हृदयंगम कराने के लिए होने चाहिए। इस प्रयत्न को पुराने शब्दों में आध्यात्मिकता का प्रसार कहा जायेगा। वस्तुतः यही वह आधार है, जिसके सहारे हर व्यक्ति को 'पुलिस मैन' बनाया जा सकता है। स्वयं आदर्शवाद अपनाने वाले ही दूसरों को सही नागरिक बनकर रहने के लिए विवश कर सकते हैं। अपनी छाप छोड़कर वे संपर्क क्षेत्र को शालीनता से भरा-पूरा बना सकते हैं। ऐसी दशा में न तो दुष्प्रवृत्ति के पनपने की आशंका रहेगी और न उनकी रोकथाम के लिए उतना खर्चीला ढाँचा खड़ा रखने की आवश्यकता पड़ेगी।

अपराधी दुष्प्रवृत्तियाँ और हेय अवांछनीयताओं का स्थायी उन्मूलन करने के लिए अध्यात्म की पुनः प्राण-प्रतिष्ठा करना न तो असंभव है और न कठिन। वातावरण में व्यक्तियों का अंतरंग और बहिरंग ढाँचा-ढालने की पूरी क्षमता है। समाज के मूर्धन्य व्यक्ति यदि इसकी आवश्यकता अनुभव कर सकें तो बुद्धिजीवी, अर्थशास्त्री, साहित्य सृजेता, धर्माध्यक्ष, शासनाधिकारी एवं कलाकार व प्रतिभाशाली विभूतियों के संयुक्त प्रयास से ऐसा वातावरण सहज ही बन सकता है, जिसमें जनसाधारण को उत्कृष्ट चिंतन एवं आदर्श कर्तृत्व अपनाने की ही इच्छा उत्पन्न हो और वैसे ही

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

मानवी चिंतन यदि मोड़ा जा सके तो भय, आशंका और अविश्वास के कारण पनपने वाली हिंसा और प्रतिहिंसा की जड़ें कट जाएँगी। आए दिन जो दंगे, फसाद, वर्ग-संघर्ष, क्षेत्रीय युद्ध और विश्व युद्ध के बादल घुमड़ते रहते हैं, उनका दर्शन भी न होगा। घृणा के स्थान पर आत्मीयता, द्वेष के स्थान पर प्रेम की, शोषण के स्थान पर सहयोग की स्थापना की जा सकती है। ऐसा हो सके तो आंतरिक सुव्यवस्था और सीमा सुरक्षा के लिए समस्त संसार मे जितनी धन शक्ति खर्च करनी पड़ रही है, उसे शिक्षा, सिंचाई जैसे उपयोगी कार्यों में लगाया जा सकता है। तब अपनी दुनिया में एक भी आदमी अशिक्षित, एक भी विभुक्षित, एक भी रुग्ण और एक भी उद्विग्न दिखाई न पड़ेगा। परस्पर घात-प्रतिघात में लगी हुई शक्ति यदि सृजन सहयोग में लगा सके तो उसका दोहरा लाभ होगा। ध्वंस के दुष्परिणामों से छुटकारा मिलेगा और सृजन की सुखद संभावनाएँ बढ़ेंगी।

छोटे-से परिवार में सभी लोग मिल-जुलकर स्नेह सद्‌भाव पूर्वक गुजारा कर लेते हैं। उसमें बाल, वृद्ध, समर्थ, असमर्थ, विकसित, अविकसित सभी स्तर के लोग रहते हैं, पर किसी को एक-दूसरे से भय नहीं रहता। एक-दूसरे के प्रति संदेह-अविश्वास नहीं करते, दुर्भाव नहीं रखते और दुलार-सहयोग में कमी नहीं देखते। पारस्परिक सद्‌भाव संपन्नता से घर के हर सदस्य को अपने-अपने ढंग का आनंद और संतोष मिलता है। सभी एक-दूसरे से लाभ उठाते हैं और उस मिली-जुली उदार सहकारिता से पूरा परिवार सुदृढ-सुविकसित बनता चला जाता है। सुसंस्कृत परिवारों में कई प्रकार की कठिनाइयाँ रहते हुए भी स्वर्गीय वातावरण बना रहता है। उसके सदस्यों को व्यक्तिगत उत्कर्ष का लाभ मिलता है और उन घटकों का सम्मिलित रूप समूचे समाज को समुन्नत बनाने में अप्रत्यक्ष किंतु असाधारण योगदान करता है। विचारणीय यह है

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

कि मानवीय स्वभाव में सहकारिता कूट-कूट कर भरी होने पर भी वह लाभ समाज को क्यों नहीं मिलता, जो सुसंस्कृत परिवारों को मिलता है ? आज समाज के सम्मुख सर्वग्रासी विभीषिकाएँ क्यों प्रस्तुत हैं ? यह प्रश्न भी कम गंभीर और कम विचारणीय नहीं है।

यदि हम तथ्यों की ओर से आँखें फेर न लें तो यह समझा जा सकता है कि हमारे द्वारा विकृत दृष्टिकोण तथा निकृष्ट रीति-नीति अपनाई गई। फलतः अगणित कठिनाइयों की घटा घिर आई। यह समझ लिया जाए तो उसी निष्कर्ष पर पहुँचना होगा कि प्रस्तुत कष्टकारक उलझनों को सुलझाने के लिए हमारा क्रिया-कलाप बदलना चाहिए। यह परिवर्तन उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तृत्व के उसी समन्वय से संभव है, जिसे तत्त्वज्ञानियों ने अध्यात्मवाद का नाम दिया है और जिसे बोलचाल की भाषा में आदर्शवाद कहा जा सकता है। मनुष्य को मानवतावादी होना चाहिए। उसे व्यक्तिवादी आपाधापी से विमुख होकर, समूहवादी रीति नीति अपनानी चाहिए। इसी को शास्त्रीय शब्दों में अध्यात्मवाद और राजनैतिक शब्दों में समाजवाद कह सकते हैं। अच्छा है इस तत्त्वदर्शन का नामकरण मानवतावाद किया जाए।

ज्ञान-विज्ञान और उद्योग की दिशा में गगनचुंबी प्रगति हो रही है। उसके लिए मूर्धन्य लोग जी तोड़ परिश्रम कर रहे हैं। इन प्रयासों का प्रतिफल भी सामने हैं। भौतिक प्रगति को एक वरदान कहने में किसी को कोई संकोच नहीं हो सकता, किंतु इतना ही तो सब कुछ नहीं है। आवश्यकता उस सद्भावना और दूरदर्शिता की भी है, जिसके सहारे इन उपलब्धियों का सदुपयोग किया जा सके। यही वह मर्म-स्थल है; जहाँ हम चूकते, भटकते और गिरते हैं। फलतः वह वहाँ पहुँचा देगी, जहाँ से सर्वनाश के, महाकाल के कराल दाँतों में पिस जाने और सभ्यता की उपलब्धियों को गँवा बैठने के अतिरिक्त और कुछ हाथ में न रह जायेगा। समझदारी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

की माँग है कि समय रहते रोग की भयंकरता को समझा जाए। निदान विश्लेषण के सहारे कारणों को ढूँढ़ निकाला जाए।

कोई कारण नहीं कि मनुष्य मिल-जुलकर न रह सके। ऐसी कोई समस्या नहीं जिसका हल न्याय और औचित्य को अपनाकर, विवेकपूर्वक न खोजा जा सके। देश और देश का लड़ना आवश्यक नहीं। मनुष्य को मनुष्यों से, वर्गों का वर्गों से झगड़ना, मात्र बढ़ी हुई दुर्बुद्धि के कारण ही होता है। इस पर अंकुश लग सकता है। विवेक और सृजन की शक्तियाँ मिल-जुलकर विध्वंसकारियों को मात दे सकती हैं। असुरता इतनी प्रबल नहीं है, जो देवत्व को सर्वदा के लिए हरा सके। सद्भावना के समर्थक बिखरे रहते हैं। यदि एकजुट होकर ममत्व का प्रसार और सृजन का विस्तार करने के लिए कटिबद्ध हो जाए तो मनुष्य जाति का भविष्य उज्ज्वल बनाने वाली विश्वशांति की संभावनाएँ कल्पना न रहकर, कल ही सुनिश्चित यथार्थता बन सकेंगी। तब इसे अध्यात्मवाद की विजय कहा जा सकेगा।

(३) विश्वव्यापी अर्थसंकट वास्तविक नहीं, पूर्णतया कृत्रिम है। धरती माता की उर्वरता इतनी न्यून नहीं है कि वह अपनी संतानों का भरण-पोषण न कर सके। कुछेक लोगों ने संपत्ति को, उपार्जन के साधनों को अपने कब्जे में कर रखा है फलतः सर्वसाधारण को उनसे वंचित रहना पड़ रहा है। अपने देश में भूदान की, भूमि वितरण की दिशा में जो कदम बढ़ाए जा रहे हैं, वे ही सार्वभौम बन सकते हैं। अमेरिका, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया आदि विशालकाय भूखंडों में खाली जमीनें पड़ी हैं और उस पर थोड़े लोगों का आधिपत्य है। यदि मनुष्य मनुष्य के बीच भाईचारा हो और प्रकृति संपदा पर उसके सभी पुत्रों का अधिकार स्वीकार कर लिया जाए तो उस भूमि से संसार की समस्त आबादी को लाभ मिल सकता है। धनाधीशों के हाथ में रुकी हुई पूँजी यदि सार्वजनिक उद्योगों में

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

लग सके तो उससे संसार के हर आदमी को रोजी-रोटी मिल सकती है। जो वृद्धि एवं पूँजी व्यक्तिगत स्वार्थ-साधनों में, सुखोपभोग में लगी है उसी को यदि लोकमंगल के लिए नियोजित किया जा सके तो संसार में अज्ञान और दारिद्रय के टिके रहने का कोई कारण ही शेष न रहे।

क्या ऐसा नहीं हो सकता ? निश्चित रूप से हो सकता है। व्यक्तिवादी स्वार्थपरता की असुरता से यदि संगठित देवत्व लड़ पड़े और आधिपत्य की आपाधापी आत्मीयता के विराट् विस्तार में लग सकें। हर व्यक्ति अपने को समाज का अविच्छिन्न घटक मानकर- सर्वहित में अपना हित अनुभव करने लगे तो उसका चिंतन एवं कर्तृत्व लोकमंगल में लगेगा। साधनों को बाँटकर जो आनंद पाया जाता है, वह कितना बहुमूल्य है, इसे आज तो समझ पाना कठिन हो रहा है। किंतु यदि वह व्यवहार में आने लगे तो उसके सुखद परिणामों को देखकर, हम अपनी ही दुनिया की स्वर्गलोक से तुलना करने लगेंगे।

यह कार्य तब तक अति कठिन बना रहेगा, जब तक इसे कूटनीति एवं अर्थनीति के सहारे हल कर लेने की बात सोची जाती रहेगी। प्रयत्न राजनैतिक भी होते रहें और चेष्टा आर्थिक विकास की भी चलती रहे पर स्थिर समाधान मात्र अध्यात्मवाद की प्रतिष्ठापना में देखा जाए। मानवी सत्ता जड़ नहीं चेतन है। चेतन की चेतना ही उठाती गिराती है। यदि हमारी आस्थाएँ उपभोग की लिप्सा पर अटकी रहे तो धन-संपदा पर एकाधिकार की, असीम उपभोग और उद्धत अपव्यय की प्रकृति बनी रहेगी। इससे कुछ लोगों की अमीरी रह सकती है कुछ की मनमानी चल सकती है पर सर्व—जनीन अर्थसंकट का अंत न हो सकेगा। उपार्जन वितरण और उपभोग पर यदि अध्यात्मवादी अंकुश रखा जा सके तो ही हम सब दरिद्रता के अभिशाप से स्थायी मुक्ति पा सकते हैं।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

(४) बढ़ती हुई जनसंख्या की विश्वव्यापी जनसंख्या के दो पहलू हैं—(i) बढ़ी हुई जनसंख्या की समुचित व्यवस्था तथा (ii) परिवार नियोजन द्वारा जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण। इस समस्या के उचित समाधान न खोजे जा सके तो असंतुलन और विक्षोभ चरम सीमा तक पहुँच जायेंगे। ऐसी स्थिति में उसके संतुलन के लिए किसी महायुद्ध अथवा किसी प्राकृतिक प्रकोप द्वारा नर संहार ही एकमात्र हल हो सकता है, जिसकी कल्पना तक से हृदय काँपने लगता है।

उपर्युक्त समस्या के उपर्युक्त हल में आध्यात्मिक प्रक्रिया हर दृष्टि से समर्थ हैं। संसार के विस्तृत भूखंडों और प्राकृतिक-संपदा का उपयोग विवेक सम्मत ढंग से किया जा सके तो वर्तमान जनसंख्या की समुचित व्यवस्था कोई बड़ी बात नहीं है। किंतु इसमें विकसित मानसिक स्थिति और उदार अंतःकरण जैसे आध्यात्मिक गुणों का अभाव ही एकमात्र रुकावट है।

जनसंख्या की वृद्धि के लिए विभिन्न ढंग खोजे और अपनाए जाएँ यह ठीक है, किंतु उसके पीछे सन्निहित मूल मान्यताएँ भी बदलनी चाहिए। जब तक यह मान्यता बनी है कि अपना अर्थात अपने रक्त से पैदा हुआ—तब तक अपनत्व के विस्तार और अपने अधिकारों-स्वत्वों की रक्षा के लिए प्रजनन की आवश्यकता अनुभव की जाती रहेगी। किंतु यदि आध्यात्मिक स्तर पर अपनत्व की अनुभूति की जा सके तो मनुष्यमात्र क्या प्राणिमात्र अपने परिवार के रूप में दिखने लगता है। फिर किसी अभाव की पूर्ति अथवा भय आशंका के निवारण के लिए अपनों की संख्या बढ़ाने के प्रयास में निरर्थक प्रजनन सहज ही बंद हो जायेगा। जो कार्य ढेरों शक्ति लगाकर भी असंभव दिखता है, वही आध्यात्मिक दृष्टिकोण विकसित करके सहज ही पूरा किया जा सकता है।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

(५) व्यक्तिवादी आपाधापी जितनी बढ़ेगी उतनी ही विषमता बढ़ेगी। एक ओर खड्ड होंगे दूसरी ओर टीले। टीले आकर्षक हो सकते हैं। खड्डों की भयंकरता आतंकित कर सकती है। उपयोगिता तो समतल भूमि की है, उसी में फसल बोई-उगाई जा सकती है और उसी में फल-फूलों से लदे हुए बगीचे लहलहा सकते हैं। अमीरी की चकाचौंध से आँखें हतप्रभ हो सकती हैं। गरीबी देखकर आँखें बरस सकती हैं, पर इससे अवांछनीयता में तो कोई अंतर नहीं आता। हमारे प्रयास समतल भूमि बनाने के लिए होने चाहिए। मानव समाज की प्रगति एकता-समता के आधार पर ही संभव है, अन्यथा एक ओर अहंकार अट्टहास कर रहा होगा। दूसरी ओर पिछड़ेपन के सींकचे में कसी हुई अधिकांश जनता चीत्कार करती हुई मरती-खपती चली जायेगी।

बिलगाव के कारण उत्पन्न होने वाले विग्रहों को यदि समझा जा सके, तो बुद्धिमत्ता इसी में प्रतीत होगी कि संसार को एक परिवार बनाया जाए और हर मनुष्य को उसका सदस्य होने का गौरव अनुभव करने दिया जाए। हममें से हर व्यक्ति अपने को विश्व नागरिक मानें, समस्त संसार को अपना घर और समस्त मनुष्य जाति को एक परिवार के अंतर्गत समेटे, तो वह दिन आ सकता है, जिसमें हम सब देव जीवन का आनंद लेते हुए मानवता को धन्य बना रहे हों और सुख-शांति के सुनहरे स्वप्नों को साकार होते हुए देख रहे हों।

बिलगाव ने धर्मक्षेत्र में अनेकानेक संप्रदाय मत-मतांतर खड़े किए हैं। क्या यह पृथकता आवश्यक है ? यदि एक सूर्य से संसार भर को प्रकाश मिल सकता है तो फिर एक धर्म समस्त मानव जाति के लिए पर्याप्त क्यों नहीं होना चाहिए ? सभी धर्म अपने को ईश्वरकृत कहते हैं और ईश्वर एक है। ऐसी दशा में एक विश्वधर्म

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

अथवा मानव धर्म होने में किसी को क्या आपत्ति होनी चाहिए ? सभी धर्मों में सार तत्त्व है। उस सार की एकता अपना लेने में कोई पूर्वाग्रह या पक्षपात क्यों बाधक होना चाहिए ? प्रथा परंपराएँ तो समयानुसार सदा से बदलती रही हैं और वे कभी भी स्थिर न रह सकेंगी। परिस्थितियाँ बदलने के साथ-साथ प्रथा-परंपराओं में परिवर्तन होते रहे हैं और होते रहेंगे। आज की परिस्थितियों के अनुरूप आचार संहिता और व्यवहार-प्रक्रिया बनाई जा सकती है और धर्म की आत्मा को शाश्वत सनातन रूप में ही शिरोधार्य किया जा सकता है। ऐसा धर्म सर्वजनीन होगा और सार्वभौम बनेगा। भारतीय धर्म का निर्माण इसी आदर्श के अनुरूप हुआ। उसमें मानव धर्म कहलाने को विश्व धर्म के रूप में स्वीकार किये जाने की परिपूर्ण पात्रता विद्यमान है। समय ने, विवेक ने, न्याय ने यदि वही कुछ परिवर्तन चाहा तो उसे स्वीकार करने में भी हिचक की आवश्यकता नहीं है।

विश्व की एक मानव भाषा हो तो वे दीवारें सहज ही टूट जायेंगी, जिन्होंने एक क्षेत्र के मनुष्य को दूसरे क्षेत्र वालों के साथ विचार-विनिमय करने पर प्रतिबंध लगा दिया है। भाषा की भिन्नता के कारण दो क्षेत्रों के निवासी गूँगे, बहरे की तरह मात्र इशारों से ही थोड़ा बहुत काम चला सकते हैं। मद्रासी और बंगाली में, मराठी और पंजाबी के बीच भाषा की दीवार मुँह पर पट्टी बाँधने जैसी रोक लगा देती है। अफ्रीकी और रूसी अपनी-अपनी भाषा में एक-दूसरे से बात करने लगें तो वह उच्चारण निरर्थक ही सिद्ध होगा। दुभाषियों के सहारे काम चलते हैं अथवा किसी जानी पहचानी भाषा का सहारा लेना पड़ता है। यदि यह और न रहे, सर्वत्र एक भाषा बोली जाने लगे तो सामान्य लोक व्यवहार का वार्तालाप ही नहीं, गंभीर ज्ञान-विज्ञान का आदान-प्रदान भी अति सरल हो सकता है। एक लिपि में लिखी जाने वाली एक विश्व

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

भाषा बन सके तो प्रेस और प्रकाशन उद्योग में आशातीत क्रांति हो सकती है। फिर क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद प्रकाशन की कठिनाई, महत्त्वपूर्ण विचारधारा का एक सीमित क्षेत्र में अवरुद्ध रहने का व्यवधान सहज ही मिट सकता है और देखते-देखते मानवी ज्ञान की परिधि गगनचुंबी हो सकती है।

छुटपुट पृथक्-पृथक् राष्ट्रों को सत्ता एक विश्व राष्ट्र में विलीन हो सकती है। जिस प्रकार एक देश के कई प्रांत, कई जिले होते हैं, उसी प्रकार एक विश्व राष्ट्र के अंतर्गत समस्त देश बने रहें और उनकी सीमा रेखाएँ भौगोलिक आधार पर नए सिरे से निर्धारित कर ली जाएँ, तो उसमें किसका क्या हर्ज होगा ? विश्व राष्ट्र की फौज ही सर्वत्र सुरक्षा व्यवस्था की उत्तरदायी होगी और देश-विदेशों के बीच आए दिन होते रहने वाले युद्धों के लिए कहीं कोई कारण शेष नहीं रहेगा। भूमि पर, प्राकृतिक संपदा पर किसी क्षेत्र के निवासी अपना अधिकार न रख सकेंगे। तब ऐसी दशा में किसी क्षेत्र को अमीर, किसी को गरीब, किसी को अपच से व किसी को भुखमरी से मरना नहीं पडेगा। जलमार्ग, थलमार्ग, नभमार्ग से सर्वत्र सबको जाने की सुविधा हो। जनसंख्या के सुविधा-साधनों के अनुरूप बसाहट कर दी जाए। खनिज तथा दूसरे प्रकृति साधनों का उपयोग सभी लोगों के लिए सुलभ बना जाए। हर किसी को श्रम करना पड़े और हर किसी को उत्पादन में हिस्सा मिले तो फिर विषमता कहीं रहेगी ही नहीं। तब विद्वेष और विद्रोह के कारण ही बच नहीं रहेंगे। युद्ध कौन करेगा ? किससे करेगा और किसलिए करेगा ? आज की सर्वनाशी युद्ध विभीषिका में अणु अस्त्रों का समावेश हो जाने से मानवी अस्तित्व के लिए संकट खड़ा हो गया है। इसकी सामयिक रोकथाम जिस किसी भी उपाय से संभव हो, की जानी चाहिए। पर इस तथ्य को ध्यान में रखा

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

जाना चाहिए कि अंतिम विश्व शांति की स्थापना, युद्धों की पूर्णतया समाप्ति 'विश्व राष्ट्र' का निर्माण होने से ही संभव होगा।

एक धर्म, एक संस्कृति, एक भाषा, एक राष्ट्र की आवश्यकता पर जितनी गंभीरता से विचार किया जायेगा उतनी ही उसकी उपयोगिता सिद्ध होती चली जायेगी। यह अध्यात्म का प्रतिपादन है। अद्वैत सिद्धांत में सर्वत्र एक ही आत्मा का अस्तित्व माना गया है। सबमें एक ही आलोक के प्रतिबिंब जगमगा रहे हैं। हम सब मणि-माणिकों की तरह पृथक् होते हुए भी एक ही सूत्र में बँधे हुए हैं। हम सबके हैं, सब हमारे हैं। यह एकात्म भाव ही आत्मविश्वास की स्थापना है। सीमित अहंता को क्षुद्रता का चिह्न माना गया है। बिलगाव की संकीर्ण स्वार्थपरता को अध्यात्म तत्त्वज्ञान में पग-पग पर भर्त्सना और उसके असीम दुष्परिणामों का विस्तारपूर्वक दिग्दर्शन कराया गया है। संकीर्णता के सीमाबंधन ही असंख्य समस्याएँ उत्पन्न करते हैं। उसी के कारण मानवी गरिमा का ह्रास होता है और अनेकानेक संकट खड़े होते हैं। स्नेह-सौजन्य से, एकता और समानता की नीति अपनाई जा सके तो वर्तमान साधनों से ही अपने संसार में, अपने युग में, सुख-संपदा के बाहुल्य और आनंद से सर्वत्र हर्षोल्लास बिखरता देखा जा सकता है।

कमी साधनों की नहीं, समस्या संकटों की नहीं, कठिनाई एक ही है कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण की उपेक्षा की गई और उसका उपहास बनाया गया। यों अभी भी अध्यात्म की चर्चा खूब होती है और उसके नाम पर आडंबर भी बहुत बनते हैं, पर उस रीति-नीति को व्यावहारिक जीवन में उतारने का प्रयास नहीं किया जाता। अध्यात्म को व्याख्याओं में धूमिल कर दिया गया है, फलतः वह भ्रांतियों का केंद्र बनकर रह गयी है। आवश्यकता इस बात की भी

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

है कि अध्यात्म के वास्तविक स्वरूप से जन साधारण को परिचित कराया जाए।

यह तथ्य हममें से प्रत्येक को हृदयंगम करना चाहिए कि उत्कृष्ट चिंतन के आधार पर परिष्कृत व्यक्तित्व बनाने वाले दृष्टिकोण का नाम अध्यात्म का तत्त्वदर्शन है। आदर्शवादी गतिविधियों को कार्यान्वित करने की प्रखर कार्यपद्धति को वैयक्तिक और सामाजिक क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली उदात्त कर्तव्यपरायणता को अध्यात्म का व्यवहार पक्ष कह सकते हैं। यही वह आधार है जिसे अपनाकर, व्यक्ति और समाज की समस्त समस्याओं का हल पाया जा सकता है और समूची मानव जाति को स्थायी सुख-शांति से लाभान्वित किया जा सकता है।

कहा जा चुका है कि संसार के सामने विशालकाय समस्याएँ, अपराध, युद्ध, अभाव, अशिक्षा आदि की है। इन्हें परिस्थितिवश उत्पन्न हुआ माना जाता है, जबकि वे विकृत मनःस्थिति की उपज हैं। सुधार उद्‌गम केंद्र का किया जाना चाहिए। समस्याओं की जड़ काटी जानी चाहिए। मानवी मस्तिष्क यदि दुर्बुद्धिग्रस्त रहेगा और दुष्प्रवृत्तियों से हमारी कार्यपद्धति ग्रसित रहेगी, तो उसकी प्रतिक्रिया असंख्य समस्याओं के रूप में उसी प्रकार बनी रहेगी जैसी कि आज है। बाह्य उपचारों से क्षणिक सहायता तो मिल सकती है, पर विग्रहों का स्थायी समाधान नहीं निकल सकेगा। युद्ध समाप्त करने की दुहाई देकर प्रथम विश्वयुद्ध लड़ा गया था, उसके समाप्त होते-होते दूसरा विश्व युद्ध लड़ा गया उसका नारा भी यही था। उसके समाप्त होते-होते तीसरे महायुद्ध की तैयारियाँ जोरों से चल पड़ी हैं। कहा जा रहा है कि उसके बाद युद्ध न होंगे। यह कथन बर्ट्रेंड रसल के शब्दों में इस आशय का हो सकता है कि, तीसरे युद्ध के बाद जो मनुष्य बचे रहेंगे, वे शस्त्रों से युद्ध लड़ सकने की

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

स्थिति में ही नहीं रहेंगे। चौथा युद्ध लड़ना पड़ा तो वह ईंट-पत्थर फेंककर ही लड़ा जा सकेगा।

यह बात निराशा उत्पन्न करने और मनोबल गिराने के लिए नहीं कही गयी है। यह तो वस्तुस्थिति का विश्लेषण मात्र है। प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त करना अच्छी बात है। हम जिस दिशा में बढ़े हैं उसकी सराहना कौन नहीं करेगा ? इस बात में दो राय नहीं हो सकतीं कि भौतिक-साधनों को बढ़ाने में हम जुटे हैं और उसमें आशाजनक सफलता पाई है, पर यह भुला नहीं दिया जाना चाहिए कि साधनों के बढ़ने के साथ-साथ, उनके सदुपयोग का उत्तरदायित्व भी बढ़ता है। भौतिक प्रगति के समानांतर आत्मिक प्रगति भी होनी चाहिए, अन्यथा उपभोग का संकट उत्पादन की उपलब्धियों को लाभदायक होने के स्थान पर और भी अधिक हानिकारक बना देगा।

सामाजिक सुख-शांति की धुरी भी आध्यात्मिकता ही है। उसे कहने-सुनने की विडंबना बनाकर नहीं रखा जाना चाहिए वरन् व्यावहारिक जीवन में उतारा जाना चाहिए। अध्यात्म कथा-पुराणों के द्वारा सिखाया ही जाना चाहिए, पर उसे सुनने-सुनाने की फलश्रुति में सीमाबद्ध नहीं किया जाना चाहिए। आज तो श्रवण और पठन तक ही अध्यात्मवादी आदर्शों का माहात्म्य मान लिया गया है। कथा सुनने और सुनाने भर से लोग स्वर्ग जाने की उपहासास्पद आशा करते हैं, जबकि वह प्रशिक्षण विशुद्ध रूप से व्यवहारिक जीवन की रीति-नीति में समाविष्ट किए जाने के लिए ही विनिर्मित हुआ है। उसका मर्म समझे बिना, तत्त्व अपनाए बिना ही आध्यात्मिकता की दुहाइयाँ देने से कोई लाभ नहीं निकल सकता। ऐसा करने वाले तो और [illegible] लोगों को अरुचि हो जाती है। अध्यात्म को उसके

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

www.akhandjyoti.org | www.awgp.org

सही स्वरूप से समझाया जाना चाहिए। यदि ऐसा हो सके तो हर क्षेत्र में इस ऋषि प्रणीत पद्धति का लाभ उठाया जाना संभव है।

विज्ञान के विकास से लेकर अर्थ साधन बढ़ाने तक के अनेकानेक प्रयत्न समस्याओं के समाधान के लिए चल रहे हैं। यह सब उचित है और यही चलते भी रहें, पर हमारे ध्यान में यह तथ्य बना ही रहना चाहिए कि अध्यात्म का आश्रय लिए बिना न तो व्यक्तिगत उलझने सुलझेंगी और न सामूहिक समस्याओं का समाधान निकलेगा। यदि प्रगति और शांति की वस्तुतः आवश्यकता और आकांक्षा हो तो यह तथ्य समय रहते स्वीकार कर लिया जाना चाहिए कि अध्यात्मवाद के प्रकाश से ही समस्त समस्याओं का हल किया जा सकता है और उसे जीवन में प्रसन्नतापूर्वक, तत्परतापूर्वक अपनाया जाना चाहिए।

❐ ❐

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.